वर्ष-16 , अंक 147
मंगलवार
10 फरवरी 2026
पृष्ट-8 मूल्य -1
www.sititoday.com

सिटी टुडे

ग्वालियर से प्रकाशित हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

भारत-अमेरिका अंतरिम व्यापार समझौता : उद्योगों के लिए विकास का नया द्वार

अहमदाबाद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा हाल ही में भारत और अमेरिका के बीच एक अंतरिम व्यापार समझौता किया गया है, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए मील का पत्थर साबित होगा। यह समझौता विशेष रूप से गुजरात के उद्योगों के लिए विकास की नई संभावनाओं के द्वार खोलेगा। भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के तहत अमेरिका ने भारतीय उत्पादों पर लगाए गए कड़े टैरिफ को लगभग 50 प्रतिशत से घटाकर करीब 18 प्रतिशत कर दिया है। इससे अमेरिकी बाजार में भारतीय उत्पादों की कीमतें अधिक प्रतिस्पर्धी बनेंगी और उनकी मांग में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में गुजरात आज भारत का सबसे बड़ा निर्यातक राज्य बन चुका है। राज्य में टेक्सटाइल, फार्मास्युटिकल्स, केमिकल्स, पेट्रोकेमिकल्स, जेम्स एंड ज्वेलरी, इंजीनियरिंग गुड्स और रिन्यूएबल एनर्जी जैसे क्षेत्रों में मजबूत औद्योगिक आधार मौजूद है। इस व्यापार समझौते से इन सभी क्षेत्रों को नया प्रोत्साहन मिलेगा। इस समझौते का सबसे अधिक लाभ टेक्सटाइल और कपड़ा उद्योग को मिलने की संभावना है। टैरिफ में कमी के चलते गुजरात के गारमेंट

और होम टेक्सटाइल उत्पाद अन्य देशों की तुलना में अधिक प्रतिस्पर्धी बनेंगे। इसके परिणामस्वरूप मध्यम अवधि में टेक्सटाइल निर्यात में 100 से 150 प्रतिशत तक की वृद्धि होने की प्रबल संभावना है। इससे राज्य के प्रमुख टेक्सटाइल क्लस्टरों में उत्पादन बढ़ेगा, अमेरिका से नए ऑर्डर प्राप्त होंगे और उद्योग की लाभप्रदता में भी वृद्धि होगी।

यह समझौता विशेष रूप से सूरत के लिए नई उम्मीद लेकर आया है। दुनिया के सबसे बड़े डायमंड पॉलिशिंग हब के रूप में पहचाने जाने वाले सूरत के हीरा उद्योग को इस निर्णय से बड़ा फायदा होगा। टैरिफ में कटौती से उद्योग का मार्जिन सुधरेगा और मांग में पुन: तेजी आएगी। साथ ही, पहले उच्च टैरिफ के कारण हुए नुकसान की भरपाई होगी और अमेरिकी बाजार में हीरा उद्योग की पकड़ फिर से मजबूत होगी।

इसके अलावा, भरूच, वापी और अहमदाबाद स्थित केमिकल और फार्मा क्लस्टरों को भी इस व्यापार समझौते से बड़ा लाभ मिलने की उम्मीद है। पहले इन क्षेत्रों के निर्यात में लगभग 25-30 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई थी, अब इसमें सुधार आएगा और उद्योगों को नई गति मिलेगी। कई फार्मास्युटिकल उत्पादों को शून्य या कम शुल्क का लाभ मिलने से अमेरिका जैसे रेगुलेटेड मार्केट में गुजरात की स्थिति और मजबूत होगी।

रिन्यूएबल एनर्जी क्षेत्र में, विशेष रूप से सोलर मैन्युफैक्चरिंग को इस समझौते से नया प्रोत्साहन मिलेगा। सोलर पैनल और उनके कंपोनेंट्स का उत्पादन बढ़ेगा और अमेरिका को इनका निर्यात अब व्यावसायिक रूप से अधिक लाभकारी होगा। इससे वैश्विक सप्लाई चेन में गुजरात की भूमिका और सशक्त बनेगी।

इसके साथ ही, ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जुड़े हस्तशिल्प और पारंपरिक कारीगरों द्वारा बनाए गए उत्पादों को भी अमेरिकी बाजार में आसान प्रवेश मिलने से बड़ा लाभ होगा। निर्यात और औद्योगिक गतिविधियों में वृद्धि का सीधा सकारात्मक प्रभाव राज्य की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। एमएसएमई इकाइयों, फैक्ट्रियों, लॉजिस्टिक्स और सहायक सेवाओं में रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

निर्यात से जुड़े एमएसएमई सशक्त होंगे, जिससे उद्यमियों और श्रमिकों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति और मजबूत बनेगी। कुल मिलाकर, भारत-अमेरिका व्यापार समझौता गुजरात के औद्योगिक विकास के लिए एक 'बूस्टर डोज़' के समान सिद्ध होगा। टैरिफ में कटौती और व्यापारिक सुगमता से औद्योगिक उत्पादन बढ़ेगा, एमएसएमई को गति मिलेगी और गुजरात वैश्विक मूल्य श्रृंखला—विशेष रूप से उच्च मूल्य वाले अमेरिकी बाजार—में एक अग्रणी राज्य के रूप में उभरेगा।

चंद्रयान-4: इसरो को मिली बड़ी कामयाबी खोज ली गई लैंडिंग की सुरक्षित जगह

श्रीहरिकोटा

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अपने अगले और अब तक के सबसे चुनौतीपूर्ण चंद्र मिशन चंद्रयान-4 की दिशा में एक बड़ी सफलता हासिल की है। इसरो के स्पेस ऐप्लिकेशन सेंटर (एसएसी) ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उस सटीक स्थान की पहचान कर ली है, जहां चंद्रयान-4 को उतारा जाएगा। यह खोज इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि चंद्रयान-4 भारत का पहला रिटर्न मिशन होगा, जिसका लक्ष्य न केवल चांद पर उतरना है, बल्कि वहां से नमूने लेकर सुरक्षित धरती पर वापस लौटना भी है।

वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-2 के ऑर्बिटर द्वारा भेजी गई हाई-रिजोल्यूशन तस्वीरों का गहन विश्लेषण करने के बाद चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर लगभग 1 वर्ग किलोमीटर के एक सुरक्षित क्षेत्र का चयन किया है। इस अध्ययन को वैज्ञानिकों की एक विशेष टीम ने अंजाम दिया है, जिन्होंने लैंडिंग के लिए चार संभावित स्थलों की समीक्षा की थी। जांच के बाद एमएम-4 नामक स्थान को सबसे उपयुक्त पाया गया है। मिशन की चुनौतियां और विशेषताएं चंद्रयान-4 मिशन तकनीक और जटिलता के मामले में पिछले मिशनों से काफी आगे है। इस मिशन में प्रोपल्सन मॉड्यूल के साथ-साथ

डिसेंटर और असेंडर मॉड्यूल शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त, पृथ्वी पर सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए ट्रांसफर मॉड्यूल और रीएंट्री मॉड्यूल भी इस मिशन का हिस्सा होंगे। मिशन का मुख्य उद्देश्य चंद्रमा की सतह से मिट्टी और पत्थरों के नमूने एकत्र करना और उन्हें सफलतापूर्वक पृथ्वी पर लाना है। यदि भारत इस मिशन में सफल रहता है, तो यह भविष्य के मानवयुक्त चंद्र मिशनों (गगनयान के अगले चरण) के लिए मील का पत्थर साबित होगा।लैंडिंग साइट की खासियत चुनी गई लैंडिंग साइट नॉविस माउंटेन पहाड़ी के पास स्थित है। पहाड़ी क्षेत्र के करीब होने के बावजूद, यह पैच काफी समतल है, जिससे लैंडर को नुकसान पहुंचने का खतरा न्यूनतम है। इस जगह की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यहां सूर्य की रोशनी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहती है, जो सौर ऊर्जा से चलने वाले उपकरणों के लिए अनिवार्य है। साथ ही, यहां बड़े गड्ढों का अभाव है, जिससे रोवर को सतह पर चलने में आसानी होगी। यह क्षेत्र चंद्रयान-3 के लैंडिंग स्थल शिव-शक्ति पॉइंट से अधिक दूर नहीं है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस इलाके के गहरे गड्ढों में बर्फ या पानी के अवशेष मिल सकते हैं।

पीएम मोदी ने किया 175 मिलियन डॉलर के आर्थिक पैकेज का ऐलान

नई दिल्ली

भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सेशेल्स के राष्ट्रपति डॉ. पैट्रिक हर्मिनी के बीच दिल्ली में सोमवार को मुलाकात हुई। मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा की। वहीं प्रधानमंत्री मोदी ने 175 मिलियन डॉलर के आर्थिक पैकेज का ऐलान कर दिया। पीएम मोदी ने आर्थिक पैकेज का ऐलान कर कहा, हम अपने आर्थिक सहयोग को और सुदृढ़ बनाने के लिए नए मौकों की तलाश जारी रखने पर सहमत हैं। लोकल करेंसी में व्यापार बढ़ाने के साथ-साथ हम फिनटैक और डिजिटल समाधान में भी अग्रसर हो रहे है। विकास साझेदारी भारत-सेशेल्स संबंधों की मजबूत नींव रही है। वहीं सेशेल्स के राष्ट्रपति डॉ. हर्मिनी ने कहा, मैं आज सेशेल्स रिपब्लिक के राष्ट्रपति के तौर पर भारत के अपने पहले राजकीय दौरे पर आकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। मैं सबसे पहले प्रधानमंत्री मोदी और भारत के लोगों को मेरे आने पर दी गई गर्मजोशी भरी मेहमान नवाजी के लिए धन्यवाद देता हूं। यह दौरा सेशेल्स और भारत के बीच लंबे समय से चली आ रही दोस्ती और आपसी सम्मान को दिखाता है, खासकर इसलिए क्योंकि यह साल हमारे रिश्तों में एक अहम पड़ाव है। इसी साल जून में, सेशेल्स और भारत अपने डिप्लोमैटिक संबंधों की गोल्डन जुबली मनाएंगे। उन्होंने कहा, दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश और ज्यादा सहयोग के मौकों पर केंद्रित कर व्यापार और प्राइवेट सेक्टर के पहलू की भी जांच की गई।

बीजेपी के ये अच्छे दिन आरएसएस की वजह से ही आए: मोहन भागवत

राम मंदिर आंदोलन में जिसने साथ दिया उसे फायदा मिला

मुंबई

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने बीजेपी को लेकर बड़ी लकीर खींच दी है। 2024 के आम चुनाव में तत्कालीन अध्यक्ष जेपी नड्डा ने एक इंटरव्यू में कहा था कि हम आरएसएस के बिना भी चुनाव में जीत सकते हैं। इसे लेकर संघ कार्यकर्ताओं के बीच असंतोष फैल गया था। अब सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा है कि बीजेपी के ये अच्छे दिन आरएसएस के चलते ही आए हैं। उन्होंने कहा कि राम मंदिर आंदोलन के लिए आरएसएस ने प्रतिबद्धता दिखाई थी और जिसने इसका साथ दिया, उसे फायदा मिला। इस तरह उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि संघ के नेतृत्व में चले राम मंदिर आंदोलन का फायदा बीजेपी को चुनाव में भी मिला।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भागवत ने साफ कर दिया कि बीजेपी के लिए आरएसएस का कितना महत्व रखता है। माना जा रहा है कि आरएसएस के

कार्यकर्ताओं का उत्साह बनाए रखने के मकसद से उन्होंने ऐसी बात कही है। इसके अलावा बीजेपी नेतृत्व के लिए भी यह एक संदेश है कि भले ही दल का विस्तार हो गया है, लेकिन उसका वैचारिक आधार अब भी आरएसएस ही है।

बता दें आरएसएस और बीजेपी के संबंधों को लेकर अकसर सवाल उठते रहे हैं। आरएसएस की ओर से बीजेपी में किसी भी फैसले लेने के दावों को खारिज किया जाता रहा है। उसका कहना है कि हम संघ के कार्यकर्ता देते हैं, लेकिन उसके फैसलों में हमारा कोई दखल नहीं रहता। पीएम मोदी की एक अलग राजनीतिक पार्टी है बीजेपी। उसमें बहुत से स्वयंसेवक हैं, लेकिन वह संघ की पार्टी नहीं है। उसमें स्वयंसेवक हैं और वे अपना काम करते हैं। उन्होंने कहा कि आरएसएस के लोगों के पास कोई और काम करने के लिए समय नहीं होता।

मोहन भागवत ने कहा कि फिर सवाल उठता है कि देश में और भी समस्याएं हैं। उनका क्या होगा। इस पर संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने कहा था कि संघ कुछ नहीं करेगा और स्वयंसेवक कुछ नहीं छोड़ेगा। उन्होंने कहा कि सभी अहम कामों में संघ के कार्यकर्ता शामिल हैं, लेकिन वे स्वतंत्र हैं। उन्होंने कहा कि हमारा काम मनमर्जी से चलता है। इसमें नियंत्रण नहीं चलता है। स्वयंसेवकों के बीच एक सहयोग की भावना है। हमारे पास एक शक्ति है तो राष्ट्र के लिए भी एक विचार है और उसके मुताबिक जो लोग बात करते हैं। उन्हें लाभ होता है, लेकिन हमारा काम किसी को लाभ पहुंचाना नहीं है।

मणिपुर में फिर हिंसा, सशस्त्र उग्रवादियों ने कई मकानों में लगाई आग, कर्फ्यू लागू

इंफाल। मणिपुर के उखरुल जिले में एक बार फिर हिंसा का तांडव देखने को मिला। रविवार रात सशस्त्र उग्रवादियों ने लिटान सारेइखोंग क्षेत्र में कई मकानों में आग लगा दी। यह हिंसा तंगखुल नगा समुदाय के एक व्यक्ति पर हुए हमले के बाद उपजे तनाव का परिणाम बताई जा रही है। प्रशासन ने स्थिति को अनियंत्रित होते देख जिले में कर्फ्यू लगा दिया गया है। मीडिया रिपोर्ट में अधिकारियों ने सोमवार को बताया कि रविवार शाम को जिले के लिटान गांव में दो आदिवासी समूहों ने पथराव किया, जिसके कारण प्रशासन को निषेधाज्ञा लागू करनी पड़ी। उन्होंने बताया कि देर रात के आसपास लिटान सारेइखोंग में तंगखुल नगा समुदाय के कई मकानों में कुकी उग्रवादियों ने आग लगा दी। पास के ही एक इलाके में कुकी समुदाय के कुछ लोगों के मकानों को भी जला दिया गया। तंगखुल मणिपुर की सबसे बड़ी नगा जनजाति है। लितान सारेइखोंग कुकी बहुल गांव है। रिपोर्ट में एक अधिकारी ने बताया कि नुकसान का आकलन किया जा रहा है और स्थिति तनावपूर्ण है। सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो फुटेज में हथियारबंद लोग गांव में मकानों और वाहनों को आग लगाते और उग्रवादी अत्याधुनिक हथियारों से हवा में फायरर करते दिखाई दे रहे हैं।

पुलिस के प्रभावशाली अभियान से संभव हुआ लाल सलाम को आखरी सलाम : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बालाघाट के नाम में ही बल है। इस जिले ने अपने आत्मबल से ही हिमालय जैसी कठिन चुनौती 'नक्सलवाद' का अंत करके दिखाया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह के नेतृत्व में देशभर में नक्सल उन्मूलन का माहौल बना। मध्यप्रदेश पुलिस ने प्रभावशाली अभियान चलाकर नक्सलियों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया और प्रदेश से लाल सलाम को आखरी सलाम किया। नक्सल उन्मूलन में हॉक फोर्स के वीर जवानों की भूमिका

अभिनंदनीय है। बालाघाट में नक्सलियों द्वारा कभी खून की होली खेली गई, परंतु जवानों को वीरता, पुलिस की दृढ़ इच्छाशक्ति और जनता के विश्वास ने क्षेत्र को नक्सल आतंक की जंजीरों से मुक्त किया। राज्य सरकार वीर शहीद जवानों को 'अमर जवान ज्योति' के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित कर रही है। हम गर्व से कह सकते हैं कि मध्यप्रदेश की धरती अब नक्सलियों से मुक्त है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बालाघाट में आयोजित कार्यक्रम में नक्सल मुठभेड़ में अदम्य साहस और वीरता का परिचय देने वाले 60 जांबाज जवानों को क्रम से पूर्व पदोन्नति प्रदान की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को बालाघाट पुलिस लाइन में आयोजित कार्यक्रम में पहुंचने पर सलामी दी गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'अमर जवान ज्योति' पर पुष्प चक्र अर्पित कर प्रदेश की शांति और सुरक्षा के लिए शहीद होने वाले जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आईएसओ मानकों के अनुसार तैयार बालाघाट जिले के 32 पुलिस स्टेशनों और अन्य शासकीय कार्यालयों का रिमोट से लोकार्पण किया, इससे संबंधित प्रमाण पत्र भी मंच से प्रदान किए गए। इस अवसर पर पुलिस जवानों ने 'वो बांके अलबेले- जो वापस न लौटे- इस मिट्टी के बेटे' गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'नक्सल संस्मरण' पुस्तक का विमोचन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को पुष्प-गुच्छ भेंट कर उनका अभिवादन किया गया। कार्यक्रम में परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, सांसद श्रीमती भारती पारधी, पूर्व मंत्री श्री गौरी शंकर बिसेन, एडीजी नक्सल विरोधी अभियान श्री वेंकटेश्वर राव, पुलिस अधीक्षक बालाघाट श्री आदित्य मिश्रा सहित विधायक गण तथा जनप्रतिनिधि विशेष रूप से उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह खेद का विषय है कि बालाघाट में पूर्व में तत्कालीन सरकार के मंत्री श्री लिखीराम कावरे की सरेआम हत्या कर दी गई थी। हमारे लिए यह बड़ी चुनौती थी, क्योंकि मध्यप्रदेश की 836 किलोमीटर लंबी सीमा छत्तीसगढ़ से लगती है। मध्यप्रदेश ने 38 पुलिस जवान और 27 आम नागरिक को खोया है। बाबा महाकाल के आशीर्वाद से राज्य सरकार ने नक्सलवादियों को जड़ से खत्म करने में सफलता प्राप्त की है।

मध्य प्रदेश कृषि विपणन मंडी बोर्ड में सालों के इंतजार के बाद 702 मंडी समितियां के कर्मचारियों को मिला उच्च प्रभार

पदस्थापना के लिए पहले आओ पहले पाओ की तर्ज पर प्रयास जारी

विशेष रिपोर्ट

ग्वालियर। मध्य प्रदेश कृषि विपणन मंडी बोर्ड के प्रबंध संचालक कुमार पुरुषोत्तम के कार्यकाल में यह सफलता गिनी जाती है के सालों के इंतजार के बाद 702 कर्मचारियों को उच्च प्रभार मिला है सूत्र अनुसार सभी कर्मचारी बोर्ड के धरातल अर्थात मंडी समितियां में वर्तमान में कार्यरत है।

जारी सूची के मुताबिक 591 सहायक उप निरीक्षकों को निरीक्षक का उच्च प्रभार दिया गया है उनमें ग्वालियर चंबल संभाग के 51 कर्मचारियों को इसका सौभाग्य मिला है इसी प्रकार निरीक्षक से सचिव स वर्ग का उच्च प्रभार 86 कर्मचारियों को मिला है इनमे ग्वालियर चंबल संभाग के 6 कर्मचारी बताए जाते हैं इसी प्रकार 17 कर्मचारियों को सचिव स वर्ग से सचिव ब तथा आठ कर्मचारियों को सचिन ब से सचिव आ का उच्च प्रभार मिला है स से ब तथा ब से आ के उच्च प्रभार की श्रेणी में ग्वालियर चंबल संभाग से किसी को सौभाग्य नहीं मिला।

सिटी टुडे को प्राप्त जानकारी अनुसार उच्च प्रभार मिलने से अधिकतर कर्मचारियों में खुशी की लहर है परंतु इस खुशी को बोर्ड मुख्यालय में बैठे प्रबंध

संचालक की किचन कैबिनेट के दोनों सदस्य स्थापना में नियम विरुद्ध 20 साल से अधिक समय से पदस्थ टिमरनी कृषि उपज मंडी का एक लिपिक अब किसको किस मंडी का प्रभार दिया जाए इसके लिए किचन कैबिनेट के सदस्यों ने सागर से चक्कर चलते हुए इस लिपिक के कंधों पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी है कुछ कर्मचारियों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया की इस लिपिक वर्ग के कर्मचारी द्वारा इच्छा अनुसार मंडी सचिव पदस्थापना करने के लिए भ्रष्टाचार की चिंगारी को अंजाम देना शुरू कर दिया है इससे प्रबंध संचालक को बदनामी का सामना करना पड़ सकता है बताया जाता है कि इस लिपिक वर्ग के कर्मचारियों से प्रबंध संचालक पहले से ही नाराज है परंतु किचन कैबिनेट के महत्वपूर्ण सदस्य ने इस लिपिक वर्ग के कर्मचारियों को अपनी ताकत पर रखा है।

बोर्ड नियमो के अनुसार उच्च प्रभार दिए जाने के लिए कई कर्मचारीयो के लिए नियम विरुद्ध आदेश जारी किए गए हैं तत्काल प्राप्त जानकारी अनुसार इनमें से भागीरथ प्रसाद अहिरवार, श्याम लाल मीणा, पंजाब सिंह दादोरीया तथा विनोद गुप्ता के नाम बताया जाता है कुछ दिन वीडियो कांफ्रेंस में प्रबंध संचालक द्वारा विनोद गुप्ता पर सख्त लहजे से नाराजगी की व्यक्त कर उसके विरुद्ध कार्रवाई हेतु प्रस्तावित किया था परंतु अचानक किचन कैबिनेट के एक सदस्य की सफलता पर प्रबंध संचालक विनोद गुप्ता पर मोहित हो गए।

प्राप्त जानकारी अनुसार निरीक्षक से स श्रेणी बने सचिवों को मन माफिक मंडी देने के लिए अभी किचन केबिनेट तथा लिपिक सूची को अंतिम रूप देने के लिए कार्य कर रहे हैं इसमें किचन केबिनेट तथा संबंधित लिपिक की सागर से चक्र चलाते हुए महत्वपूर्ण भूमिका बताई जाती है। बताया जाता है कि अगर इसमें सफलता मिल गई तो बोर्ड को बदनामी भी मिलेगी परंतु अभी सभी बेखौफ़ होकर कार्य कर रहे हैं तथा सागर का चक्कर अब फिर से ग्वालियर आने की साठगांठ के साथ शयोपुर मंडी सचिव फिर से सीहोर अथवा रायसेन जिले में पदस्थापना के लिए प्रयासरत है मंडी सचिव के एक विश्वासपात्र कर्मचारियों ने बताया अगर श्योपर मंडी सचिव को अपने प्रयासों में सफलता नहीं मिली तो वह शयोपुर मंडी के कई का कर्मचारीयो का भविष्य खराब कर सकते हैं जिससे मजबूरी में प्रबंध संचालक उसकी मन इच्छा मुताबिक मंडी दे सके।

शेष अगले अंक में

मंडी बोर्ड में फर्जी जाति प्रमाण पत्र भी चर्चा का विषय बना

प्राप्त जानकारी अनुसार मंडी बोर्ड में एक प्रथम श्रेणी के अधिकारी के अतिरिक्त ग्वालियर चंबल संभाग के 7 कर्मचारियों द्वारा आरक्षण का लाभ लेने के लिए संदिग्ध जाति प्रमाण पत्र बनवाकर नौकरी हासिल की है परंतु अभी तक इन पर किसी प्रकार की शिकायतों के बाद कार्रवाई नहीं की गई सिटी टुडे को प्राप्त जानकारी अनुसार इन सब की शिकायत अब एस टी एफ प्राप्त शिकायत के बाद जल्दी शुरू करेगी।

12 फरवरी को श्रमिकों की हड़ताल जागरूक करने निकाली बाइक रैली

भोपाल। आगामी 12 फरवरी को प्रस्तावित राष्ट्रव्यापी हड़ताल के समर्थन में आज रविवार को गोविंदपुरा औद्योगिक क्षेत्र में एक बाइक रैली का आयोजन किया गया। इस रैली के माध्यम से श्रमिक नेता दीपक गुप्ता ने औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत मजदूरों से प्रत्यक्ष संवाद किया गया और उनकी समस्याओं पर चर्चा की गई।

गुप्ता ने कहा कि न्यूनतम वेतन 30,000 हजार रुपए किए जाने, चारों काले श्रम कानून निरस्त किए जाने को लेकर अपनी बात कही रैली के दौरान मजदूरों को हड़ताल के उद्देश्य, मांगों और इसके महत्व से अवगत कराया गया तथा उनसे 12 फरवरी की राष्ट्रव्यापी हड़ताल में सक्रिय रूप से शामिल होने की अपील की गई। वक्ताओं ने कहा कि यह हड़ताल मजदूरों के अधिकारों, बेहतर कार्य परिस्थितियों और न्यायोचित मांगों को लेकर एकजुटता का प्रतीक है। कार्यक्रम में सीटू यूनियन के पुषण भट्टाचार्य, लोकेंद्र शेखावत, रामबिहारी प्रसाद, कमलेश गुप्ता, सचिन लारिया सहित बड़ी संख्या में मजदूरों नेताओं की भागीदारी रही और उन्होंने हड़ताल को समर्थन देने का भरोसा जताया।

मोटापे से निजात के लिए आज से शिविर लगेगा

संतनगर। केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद अयुष मंत्रालय के तत्वावधान में संत हिरदाराम मेडिकल कॉलेज ऑफ नेचरोपैथी एंड यौगिक साइंसेज फॉर वूमेन भोपाल द्वारा मोटापे के लिए योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा इंटरवेंशन कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है7 9 से 15 फरवरी तक मोटापे से ग्रसित लोगों के लिए योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से निशुल्क उपचार शिविर लगाया जाएगा7 शिविर में योग प्राणायाम प्राकृतिक चिकित्सा उपचार के साथ आहार एवं जीवन शैली संबंधी परामर्श भी विशेषज्ञों द्वारा दिया जाएगा।

गरीब सामान्य वर्ग को 10 नहीं, मिलता है अधिकतम 5 प्रतिशत आरक्षण

भोपाल

गरीब सामान्य वर्ग को 10 नहीं बल्कि, अधिकतम 5 प्रतिशत ही आरक्षण मिलता है। भारत सरकार द्वारा ईडब्ल्यूएस संवर्ग के आरक्षण श्रेणी को लेकर यह कहना है मंत्रालयीन सेवा अधिकारी-कर्मचारी संघ के अध्यक्ष इंजी सुधीर नायक का। जारी बयान में उन्होंने शासन द्वारा घोषित पदों की श्रेणी में अनारक्षित यानी यूआर के स्थान पर मेरिट या परिश्रम श्रेणी रखने की मांग की है।

उन्होंने उदाहरण सहित बताया कि सामान्य वर्ग को अलग से कुछ नहीं दिया गया। एक हाथ से सामान्य वर्ग का कम करके दूसरे हाथ से सामान्य वर्ग को ही दे दिया गया। एक बड़ा भ्रम फैला हुआ है कि गरीब सामान्य वर्ग को 10 प्रतिशत आरक्षण दे दिया गया है। जबकि यह कुल पदों का 10 प्रतिशत भी नहीं है बल्कि, अनारक्षित पदों का 10 प्रतिशत है। हाईकोर्ट अपने कुछ फैसलों में इसकी पुष्टि भी कर चुका है। उनका कहना है कि हर श्रेणी में 33 प्रतिशत पद महिलाओं को आरक्षित हैं। 06 प्रतिशत दिव्यागों को आरक्षित हैं। संविदा कर्मचारियों को भी आरक्षण है।

तो 3.7 प्रतिशत रह जाएगी ईडब्ल्यूएस सीटें

आरक्षण बढ़ाने चल रही प्रदेश में कवायद के बीच श्री नायक ने आगामी समय में गरीब सामान्य वर्ग के ईडब्ल्यूएस आरक्षण 5 से घटकर 3.7 रह जाने का अनुमान जताया है। उन्होंने कहा कि यदि आरक्षण 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ाया जाता है तो अनारक्षित को 100 में केवल 37 सीटें बचेंगी। इसका 10 प्रतिशत अर्थात् 3.7 रिक्तियां ही ईडब्ल्यूएस के खाते में जा पाएगी।

भूतपूर्व सैनिकों को भी आरक्षण है। बस, मेरिट वाली, टॉपर्स वाली कोई श्रेणी नहीं है। वैसे बचे खुचे पदों पर मेरिट वाले आ जाते हैं लेकिन उनके नाम की कोई श्रेणी नहीं है।

इस हिसाब से मप्र में मिल रहा आरक्षण

यदि मप्र में भर्ती निकलती है तो 100 पदों में 20 प्रतिशत एसटी को, 16 प्रतिशत एससी को, 14 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग को आरक्षित हैं। इसके बाद जो 50 पद अनारक्षित बचते हैं उन 50 पदों का 10 प्रतिशत अर्थात् 05 पद ईडब्ल्यूएस के लिए आरक्षित किये जाते हैं, जो कि कुल पदों का केवल 05 प्रतिशत ही होंगे। यह किसी भी हालत में कुल रिक्तियों का 5 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकता क्योंकि कहीं भी 50 प्रतिशत से कम आरक्षण नहीं है। जबकि पिछड़ा वर्ग को 13 से बढ़ाकर 27 प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय अभी न्यायालय में लंबित है।

दिन में चटक धूप से रात तक सिमटी ठंडक

बसंत के साथ बदलने लगा मौसम

भोपाल

बसंत की शुरूआत में ही मौसम की रंगत बदलने लगी है। जिससे तापमान में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी हुई है। भोपाल में दिन की चटक धूप से ठंडक जहां रात तक सिमट गई है। वहीं आगामी तीन दिनों में तापमान 3 डिग्री तक बढ़ जाने का अनुमान लगाया है। इसके पहले राजधानी का बैरसिया 29.9 डिग्री तापमान के साथ रविवार प्रदेश के 5 सबसे अधिक तापमान वाले जिलों में सुमार रहा।

महत्वपूर्ण है कि फरवरी की शुरुआत से ही बादल, कोहरे और हवा के रुख में लगातार बदलाव के चलते प्रदेश में कभी ठंडक तो कभी उमस का दौर बना हुआ है। फिलहाल मौसम शुष्क है और किसी प्रकार की चेतावनी नहीं है। ऐसे में रात में हल्की ठंडक जरूर है, लेकिन दिन गर्मी का एहसास कराने लगा है।

मौसम विभाग के मुताबिक आगामी दिनों में सक्रिय हो रहे पश्चिमी विक्षोभ के कारण पारे में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। इस बीच तापमान में 3 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ोत्तरी दर्ज की जा सकती है। फिलहाल राजधानी सहित प्रदेश में कहीं भी बारिश होने के आसार नहीं है।

इसलिये ऐसा मौसम

- मध्य और ऊपरी क्षोभमंडल पछुआ हवाओं में एक ट्रफ के रूप में पश्चिमी विक्षोभ के 09 फरवरी 2026 से पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र को प्रभावित करने की संभावना है।
- उपोष्णकटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम हवाएँ 140 समुद्री मील की गति से चलते हुए उत्तरी भारत में बनी हुई है।

बंधुआ मजदूरी रोकने प्रदेश में चलेगा अभियान

भोपाल

राज्य में बंधुआ मजदूरी रोकने के लिए आज से विशेष अभियान शुरू किया जा रहा है। इस अभियान के तहत उन लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी जो बंधुआ मजदूरी कराते हैं। इस तारतम्य में बंधक श्रम उन्मूलन दिवस पर राजधानी के कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेन्शन सेंटर में कार्यशाला आयोजित की गई है।

इस कार्यक्रम में श्रम मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल उपस्थित रहेंगे और कार्यशाला में राज्य स्तरीय एक्शन प्लान का विमोचन भी होगा। इसके साथ ही बाल एवं कुमार श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम, 1986 के अंतर्गत राज्य एक्शन प्लान के प्रभावी क्रियान्वयन पर चर्चा होगी। इसमें अधिनियम के अंतर्गत निरीक्षण, पहचान, बचाव एवं पुनर्वास की प्रक्रिया पर चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही बंधुआ श्रम (उन्मूलन) अधिनियम, 1976 के क्रियान्वयन के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर अधिनियम की उपलब्धियों एवं वर्तमान चुनौतियों पर विचार किया जाएगा।

यह होगा फायदा

राज्य एक्शन प्लान के माध्यम से विभागीय समन्वय, प्रवर्तन व्यवस्था एवं जनजागरूकता को सुदृढ़ करने की रणनीति प्रस्तुत की जाएगी। श्रम विभाग के अनुसार, कार्यशाला का उद्देश्य कानून, नीति और जमीनी क्रियान्वयन के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना है, ताकि राज्य में बाल एवं बंधुआ श्रम के उन्मूलन की दिशा में प्रभावी और ठोस परिणाम सुनिश्चित किए जा सकें।

कृष्णा मालीवाड और साथियों ने दी भगोरिया नृत्य की प्रस्तुति

भोपाल

राजधानी भोपाल स्थित मप्र जनजातीय संग्रहालय में नृत्य, गायन एवं वादन पर केंद्रित गतिविधि 'संभावना' का आयोजन किया जाता है। इस रविवार को राजगढ़ जिले के महेश मालवीय एवं साथी कलाकारों द्वारा कबीर गायन, दतिया जिले के विनोद सेन एवं साथियों द्वारा लांगुरिया गायन, भोपाल से देवी भजन एवं राखी बांके एवं साथियों द्वारा गणगौर नृत्य और धार जिले से कृष्णा मालीवाड और साथियों द्वारा भगोरिया नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

मध्य प्रदेश के मालवा एवं झाबुआ और अलीराजपुर क्षेत्र में निवास करने वाली भील जनजाति का भगोरिया नृत्य, भगोरिया हाट में होली तथा अन्य अवसरों पर भील युवक-युवतियों द्वारा किया जाता है। फागुन के मौसम में होली से पूर्व भगोरिया हाटों का आयोजन होता है। भगोरिया नृत्य में विविध पदचाप समूहन पाली, चक्रीपाली तथा पिरामिड नृत्य मुद्राएं आकर्षण की केन्द्र होती हैं। रंग-बिरंगी वेशभूषा में सजी-धजी युवतियों का श्रृंगार और हाथ में तीरकमान लिये नाचना ठेठ पारम्परिक व अलौकिक सरंचना है। गणगौर निमाड़ी जन-जीवन का गीति काव्य है। चैत्र दशमी से चैत्र सुदी तृतीया तक पूरे नौ दिनों तक चलने वाले इस गणगौर उत्सव का ऐसा एक भी कार्य नहीं, जो बिना गीत के हो। गणगौर के रथ सजाये जाते हैं, रथ दौड़ाये जाते हैं।

इसी अवसर पर गणगौर नृत्य भी किया जाता है। झालरिया दिये जाते हैं। महिला और पुरूष रनुबाई और धणियर सूर्यदेव के रथों को सिर पर रखकर नाचते हैं। ढोल और थाली वाद्य गणगौर के केन्द्र होते हैं। गणगौर निमाड़ के साथ राजस्थान, गुजरात, मालवा में भी उतना ही लोकप्रिय है। गौरतलब है कि मप्र जनजातीय संग्रहालय में हर रविवार दोपहर 2 बजे से आयोजित होने वाली इस गतिविधि में प्रदेश के पांच लोकांचलों एवं सात प्रमुख जनजातियों की बहुविध कला परंपराओं की प्रस्तुति दी जाती है। इसके अलावा देश के अन्य राज्यों के कलारूपों को देखने समझने का अवसर भी जनसामान्य को प्राप्त होता है।

करणी सेना ने कहा- यूजीसी का काला कानून वापस लो

यूजीसी फैसलों के विरोध में निकाला मशाल जुलूस

भोपाल

यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (यूजीसी) से जुड़े हालिया फैसलों के विरोध में रविवार शाम भोपाल में क्षत्रिय करणी सेना ने मशाल जुलूस निकाला। जुलूस भारत माता चौराहा से शुरू होकर राजभवन तक जाना था, लेकिन पुलिस ने रास्ते में ही उसे रोक लिया। राज्यपाल को ज्ञापन देने के लिए सिर्फ पांच लोगों को जाने की अनुमति दी। ज्ञापन सौंपकर यूजीसी के निर्णयों को लेकर समाज की आपत्तियां दर्ज कराई गई। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष इंदल सिंह राणा ने कहा कि यूजीसी काला कानून वापस लिया जाए। क्षत्रिय करणी सेना के प्रदेश कार्यवाहक अध्यक्ष और भोपाल जिला अध्यक्ष आशु सिंह ने बताया कि इस कार्यक्रम का नेतृत्व प्रदेश अध्यक्ष इंदल सिंह राणा और प्रदेश महिला अध्यक्ष बबीता सिंह चौहान ने की। उन्होंने कहा कि जुलूस में भोपाल सहित आसपास के जिलों से सैकड़ों करणी सैनिक शामिल हुए।

नाटक की प्रस्तुति

भोपाल। गोसाईं लीव्स एंड फ्लावर्स परफोर्मिंग आर्ट्स सोसाइटी, भोपाल के तत्वावधान में रंगश्री लिटिल बैलेट् ट्रप साईस सेन्टर के पास श्यामला हिल्स में एकरंग सोशियो कल्चरल सोसाइटी के सदस्यों ने दी नाटक की प्रस्तुति।

विधायक सबनानी ने हितग्राहियों को वितरित किए बीपीएल कार्ड

भोपाल

दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के विधायक भगवानदास सबनानी ने 45 बंगले स्थित अपने निवास पर बीपीएल कार्ड का वितरण किया। दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के पंचशील मंडल के अंतर्गत रहने वाले 22 हितग्राहियों को बीपीएल कार्ड का वितरण किया गया, हितग्राहियों के साथ मंडल अध्यक्ष प्रियेश उपाध्याय विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर सबनानी ने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जन-जन तक पहुंच सके और उन्हें इसका लाभ मिले इसके लिए भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता प्रयासरत रहता है, और प्रत्येक हितग्राहियों को योजनाओं की जानकारी देकर इसका लाभ दिलाने में उनकी मदद करता है।

संत श्री गजानन महाराज का 148वां प्राकट्य दिवस श्रद्धा-भक्ति से मनाया

भोपाल

दादाजी धाम मंदिर, रायसेन रोड, पटेल नगर, भोपाल में शेगांव (महाराष्ट्र) के सिद्ध श्री गजानन महाराज का 148वाँ प्राकट्य दिवस रविवार को श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास से हुआ। इस पावन पर मंदिर प्रांगण में विविध धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया। प्रात: 9:30 बजे गर्भगृह परिक्रमा में विराजित संत श्री गजानन महाराज का अभिषेक, पूजन, अर्चना, आरती एवं हवन यजमान श्री ओमप्रकाश राजपूत एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनीता राजपूत द्वारा पं. राजेन्द्र पलिया के सान्निध्य में वैदिक विधि-विधान से संपन्न हुआ। प्रात: 10:00 बजे से अमृत ग्रुप महिला मंडल द्वारा भक्ति भावपूर्वक सुंदरकांड पाठ किया गया, जिसमें प्रमुख रूप से मंजू शर्मा, ज्योति शुक्ला, सुषमा मणि, कल्पना रावत, सुमन सिंह, नीता शुक्ला, अनीता राजपूत, रचना राजपूत सहित अयोध्या नगर एवं भोपाल के विभिन्न क्षेत्रों से पधारी महिला भक्तों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम के उपरांत संत श्री गजानन महाराज को भोग स्वरूप झुंका-भाकर, मिरची ठेचा, मोदक, सूजी का हलवा, बूंदी, पूरी, पुलाव-सब्जी एवं नमकीन अर्पित किए गए। तत्पश्चात विशाल भंडारे का आयोजन हुआ, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर पुण्य लाभ अर्जित किया। इस अवसर पर श्री श्री 1008 श्री दादाजी गुरुदेव चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवरतन नामदेव, सचिव धनंजय बोरकर, मंदिर व्यवस्था समिति के सदस्य स्वाति बोरकर, आर. डी. धुर्वे, आलोक राजपूत, नेहा राजपूत सहित कई भक्त मौजूद रहे।

एक साल से किया जा रहा था इंतजार, अलग-अलग कारणों से टल रहा था थाने का उदघाटन

कजलीखेड़ा थाना बनने से पहले चौकी हुई घोषित

भोपाल

पुलिस कमिश्नरेट प्रणाली शुरु होने के चार साल बाद पहला थाना कजलीखेड़ा बनने जा रहा है। हालांकि यह पुलिस विभाग के रिकॉर्ड में अभी सहायता केंद्र है। इसलिए थाना बनाने के पहले कजलीखेड़ा को पुलिस चौकी घोषित किया गया है। यह थाना एक साल पूर्व स्वीकृत हो गया था। लेकिन, अलग-अलग कारणों से इसके शुरु होने का मामला अटकता रहा। जानकारी के अनुसार कोलार रोड थाने की कई कॉलोनियों को काटने के बाद इसे कजलीखेड़ा थाना बनाया गया है। इसके लिए तेरह सदस्यीय महिला स्टाफ पुलिस चौकी के रुप में घोषित कर दिया गया है। जिसके प्रभारी फिलहाल एसआई केशांत शर्मा हैं। उनका आदेश आधिकारिक रुप से जारी नहीं हैं। इससे पहले यहां के प्रभारी संतोष रघुवंशी थे। जिन्हें वहां से हटा दिया गया है। इससे पहले थाने की कॉलोनी और सीमांकन का विवाद आने के कारण कजलीखेड़ा थाने की शक्ल नहीं ले पाया था। थाने की इस कमी को पूरा किया गया तो पता चला कि यहां तैनात होने वाले बल को स्वीकृत करने वाले नियमों को अफसर भूल गए। जिसके बाद फिर यह नस्ती गृह विभाग को भेजी गई थी। पुलिस सूत्रों ने बताया कि इस थाने का उदघाटन तत्कालीन पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्र के तबादला आदेश जारी होने से पूर्व ही होने वाला था। लेकिन, तीन दिन के भीतर में यह कवायद कर पाना संभव नहीं था। क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़े जोन का आठवां थाना: पुलिस कमिश्नरेट प्रणाली दिसंबर, 2021 में शुरु हुई थी। जिसके बाद भोपाल शहर के 34 थानों को इसमें शामिल किया गया था। इसके अलावा भोपाल देहात के सात थाने अलग किए गए थे। भोपाल शहर के चार जोन थानों के बनाए गए थे। इसमें तीन जोन में नौ-नौ थाने हैं। जबकि क्षेत्रफल के लिहाज से सबसे बड़ा जोन-4 है। जिसमें अभी तक सिर्फ सात थाने हैं। कजलीखेड़ा थाना बनेगा तो यह संख्या आठ पहुंच जाएगी। सीमांकन के लिहाज से विवादित: पुलिस कमिश्नरेट प्रणाली में जोन-4 में शामिल कजलीखेड़ा, कोलार रोड और चूना भट्टी थाने की सीमा शुरु से ही विवादों में रही हैं। दरअसल, यह थाने जोन-4 में आते है। जिसके डीसीपी गांधी नगर थाने के नजदीक बैठते हैं। गंभीर वारदात होने पर डीसीपी को वहां से यहां आना पड़ता है। इसी तरह यहां के पीड़ितों को भी डीसीपी से शिकायत करने के लिए शहर का आधा हिस्सा पार करके वहां जाना होता है।

डीसीपी के बाद दिनभर पुलिस कमिश्नर ने डेरा जमाया

कोलार रोड से अलग करके बनाया जा रहा कजलीखेड़ा थाने का निरीक्षण दो दिन पूर्व डीसीपी जोन-4 मयूर खंडेलवाल ने किया था। इसके बाद रविवार को दिनभर पुलिस कमिश्नर संजय कुमार क्राइम और उसके प्रकार को लेकर मैदानी अफसरों के साथ संवाद करते रहे। पुलिस कमिश्नर ने करीब दो घंटा अपना समय कोलार रोड थाने में ही बिताया। इससे पहले विभाग की तरफ से कजलीखेड़ा थाने में दर्ज प्रकरणों की केस डायरी को ट्रांसफर करने की तैयारी को भी देखते रहे।

प्रेम प्रकाश आश्रम में हो रहे नित्य प्रवचन

मुरैना। प्रेम प्रकाश आश्रम मुरैना में वार्षिक महोत्सव मनाया जा रहा है। इस दौरान प्रतिदिन प्रवचन हो रहे हैं। रविवार को जयपुर से आए भगत प्रकाश महाराज ने प्रवचन दिए। प्रेम प्रकाश आश्रम के संत प्रताप राय, मोहन, वासुदेव तालरेजा, प्रीतम लाल चावला, सुरेंद्र अग्रवाल, राम अग्रवाल, पंडित राजेश शर्मा बिटटे, पंडित विनोद भारद्वाज, पंडित महेश शर्मा, सुरेश सोनी सहित अन्य भक्तजन उपस्थित थे।

गौरव शर्मा को ऑल इंडिया में 75वीं रैंक

मुरैना। मुरैना जिले के सुर्जनपुर गांव निवासी गौरव प्रसाद शर्मा पुत्र अजय शर्मा ने यूजीसी द्वारा आयोजित नेट परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए ऑल इंडिया में 75वीं रैंक प्राप्त की है। गौरव ने मुरैना सहित अपने गांव का मान बढ़ाया है। गौरव वर्तमान में वन विभाग के देवरी घड़ियाल केन्द्र में पदस्थ हैं। इससे पूर्व उन्होंने वर्ष 2018 की एसआई की लिखित परीक्षा में भी मुरैना में टाप रैंक प्राप्त की थी। गौरव के पिता अजय शर्मा हरिगवां स्कूल में शिक्षक हैं।

बसपा ने मनाई संत रविदास की जयंती

मौ। बहुजन समाज पार्टी के तत्वावधान में संत शिरोमणि रविदास की जयंती द्वारकापुरी मौ में मनाई गई। जिसमें मुख्य जिला प्रभारी भिण्ड अतिथि डॉ. सुनील पवैया, विशिष्ट अतिथि जिला कार्यकारिणी सदस्य विश्वनाथ गोयल, बेनीराम कुशवाहा, मौ नगर अध्यक्ष सोबरन जाटव, उपाध्यक्ष जागेश शर्मा, पूर्व पार्षद रामअवतार, दिनेश जाटव, मनमोहन सिंह, रामजीलाल बौद्ध, दिनेश मौर्य, रामजीलाल बौद्ध सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अवैध शराब के साथ आरोपी गिरफ्तार

बैराड़। थाना बैराड़ पुलिस ने कच्ची शराब के अवैध परिवहन पर कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी सुरेश शर्मा ने बताया कि खोदा-भौराना झिरी रोड के कच्चे रास्ते पर एक व्यक्ति हाथ भट्टी की बनी कच्ची शराब बेचने के लिए ले जा रहा था।

ट्रेन व प्लेटफार्म के बीच गिरी महिला को सुरक्षित निकाला, चलती ट्रेन में चढ़ने के दौरान फिसला पैर

- पूर्व प्रेमिका को जहर देकर अस्पताल के बाहर छोड़ भागा प्रेमी दबोचा
- पिछोर में कांग्रेस ने लगाया विधायक पर आतंक का आरोप

शिवपुरी

जिला मुख्यालय पर सोमवार की सुबह से ही घटनाक्रमों का दौर शुरू हो गया। आज सुबह रेलवे स्टेशन पर भोपाल जाने के लिए चलती ट्रेन में चढ़ रहीं पुरानी शिवपुरी निवासी विजयलता मिश्रा का पैर फिसलने से वो ट्रेन एवं प्लेटफार्म के बीच गिर गईं। महिला को गिरता देख ट्रेन में सवार एक यात्री ने चेन खींचकर जहां ट्रेन को रोका, तो वहीं प्लेटफार्म पर मौजूद जीआरपी के आरक्षकों ने महिला को बमुश्किल बाहर निकाला। यह तो शुक्र है कि चेन खींचते ही ट्रेन रुक गई, अन्यथा अनहोनी हो जाती। महत्वपूर्ण बात यह रही कि जब महिला को बाहर निकाला जा रहा था, तो उसे निकालने वाले वीडियो बनवाने पर अधिक नजर रखे हुए थे।

वहीं दूसरी घटना में एक युवक ने अपनी पूर्व प्रेमिका को जहर देकर मारने का प्रयास किया। जिसे सीसीटीवी फुटेज के आधार पर फिजिकल पुलिस ने चंद घंटों में दबोच लिया। करौंदी निवासी दिलीप धाकड़ ने आज अपनी पूर्व प्रेमिका को मिलने के लिए बुलाया और उसे शराब पिलाने के साथ ही इल्ली मारने की दवा पिला दी। जब लड़की की हालत बिगड़ी तो दिलीप उसे प्राइवेट अस्पताल सिद्धि विनायक के बाहर छोड़ गया। अस्पताल के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे से युवक की पहचान होने पर पुलिस ने उसे दो घंटे में राउंडअप कर लिया। बताते हैं कि दिलीप उक्त लड़की को वर्ष 2024 में उस समय भगाकर ले गया था, जब वो नाबालिग थी। उसके खिलाफ अपहरण का मामला दर्ज होने के बाद युवती को परिजनों के सुपुर्द कर दिया था, जिसकी बाद में शादी कर दी गई। लड़की शादी के बाद पति को छोड़कर मायके आ गई, और आज इस घटना का शिकार हो गई। युवती का इलाज चल रहा है।

पिछोर में भाजपा विधायक से परेशान कांग्रेसी

शिवपुरी के कांग्रेस जिलाध्यक्ष मोहित अग्रवाल एवं पूर्व अध्यक्ष विजय सिंह चौहान सहित पिछोर खनियाधाना के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने आज शाम पुलिस अधीक्षक अमन सिंह राठौड़ को पिछोर के भाजपा विधायक के खिलाफ ज्ञापन सौंपा। पूर्व कांग्रेस जिलाध्यक्ष विजय सिंह चौहान ने बताया कि पिछोर में भाजपा विधायक का इतना आतंक चल रहा है कि खनियाधाना की सिनावलकल पंचायत के निर्वाचित सरपंच भगवान सिंह ने पहले खेती छोड़ी, और अब गांव छोड़कर चले गए। इसी गाँव के अवधेश सिंह और भी 4 बार हमला हो चुका है। उनका कहना है कि पिछोर व खनियाधाना में भाजपा के शासनकाल में कांग्रेसी व आमजन का जीना मुश्किल हो रहा है।

जन्मदिन पर डॉ. सुब्बाराव को दी गई श्रद्धांजलि

जौरा

महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा के संस्थापक डॉ. एसएन सुब्बाराव के 97वें जन्म दिवस पर गांधीवादियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं आश्रम परिवार के सदस्यों ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर पूर्व विधायक महेशदत्त मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार जगदीश शुक्ला एवं वरिष्ठ भाजपा नेता कैलाश मित्तल ने डॉ. सुब्बाराव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर डोंगर शर्मा, दिलीप जैन, दीपक गुप्ता, जगदीश राना, मुनेश कुमार, संजय जादौन, मयूर खोले, स्कूल संचालक सुरेंद्र कुशवाह, प्राचार्य पूजा यादव आत्मसमर्पित बागी बहादुर सिंह उपस्थित रहे।

लंबित मांगों को लेकर शिक्षकों ने दिया ज्ञापन

मुरैना

आजाद अध्यापक शिक्षक संघ द्वारा रविवार को जिलाध्यक्ष के.के. शर्मा के नेतृत्व में जिला मुख्यालय पर पुरानी पेंशन एवं नियुक्ति दिनांक से सेवा अवधि की गणना करने सहित 21 सूत्रीय मांगो के लिए तहसीलदार हरविलास बिसारिया को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया गया। तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष रामनरेश डण्डौतिया एवं ऑल इंडिया एनपीएस एम्प्लॉयज फेडरेशन के राष्ट्रीय मिडिया प्रभारी जनक सिंह रावत ने बताया कि पुरानी पेंशन, नियुक्ति दिनांक से वरिष्ठता की गणना, ई-अटेंडेंस को समाप्त करने, अध्यापक शिक्षक संवर्ग

को केन्द्रीय कर्मचारियों की तरह 1 जनवरी 2026 से आठवें वेतनमान का लाभ देने, विगत वर्षों में दिवंगत अध्यापक शिक्षक संवर्ग के आश्रित परिवार के सदस्य को अनुकंपा नियुक्ति का लाभ देने, गुरुजिओं को उनकी प्रथम नियुक्ति दिनांक से वरिष्ठता देने, अध्यापक संवर्ग को कैशलेस मेडिकल क्लैम की सुविधा देने, अध्यापक संवर्ग की सेवानिवृत्ति आयु 65 वर्ष करने, ग्रेजुएट का लाभ प्रथम नियुक्ति दिनांक से देने सहित अन्य मांगों को लेकर ज्ञापन दिया गया है। इस दौरान डॉ. राकेश शर्मा, पंजाब सिंह यादव, जगदीश यादव, राममूर्ति डंडोतिया, दिलीप जाटव, योगेंद्र श्रीवास्तव सहित अन्य शिक्षक उपस्थित थे।

राइजिंग साइंस एक्सपो में विद्यार्थियों की वैज्ञानिक प्रतिभा का भव्य प्रदर्शन

बैराड़

शिक्षा एवं विज्ञान के क्षेत्र में एक सराहनीय पहल के रूप में रविवार 8 फरवरी को राइजिंग पब्लिक हाई स्कूल बैराड़ एवं न्यू राइजिंग पब्लिक स्कूल बैराड़ के संयुक्त तत्वावधान में राइजिंग साइंस एक्सपो-2026 का भव्य एवं गरिमामय आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साह, आत्मविश्वास एवं नवाचार की भावना के साथ बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तहसीलदार बैराड़ द्रगपाल सिंह वैश, विकासखंड शिक्षा अधिकारी पोहरी अवधेश सिंह तोमर एवं भाजपा मंडल अध्यक्ष धीरज व्यास रहे। विशिष्ट अतिथियों में वरिष्ठ पत्रकार भगवती सिंघल, डॉ. तुलाराम यादव, प्राचार्य अजय शंकर त्रिपाठी, मातादीन शर्मा, पत्रकार ललित मुद्गल, जसराम धाकड़, अक्षय जैन, अजय जैमिनी, पत्रकार सुनील शर्मा, एडवोकेट प्रशांत शर्मा, पीएसए अध्यक्ष महेंद्र धाकड़, धर्मेंद्र वर्मा, भास्कर झा, अवधेश पाठक, धर्मेंद्र कुशवाह, धर्मेंद्र शर्मा, रामबाबू मंगल सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

अतिथियों ने विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गए विज्ञान मॉडलों का अवलोकन कर उनकी रचनात्मक सोच एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर विद्यालय संचालक वीरेंद्र कुमार गुप्ता, प्राचार्या श्रीमती कल्पना गुप्ता, मैनेजिंग डायरेक्टर अनमोल गर्ग तथा समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं स्टाफ के सहयोग से कार्यक्रम को सफल बनाया गया।

ताइक्वांडो आत्मरक्षा का बेहतर हथियार: त्रिपाठी

शिविर में बच्चों को दी विधिक जानकारी

जौरा

ताइक्वांडो आत्मरक्षा का बेहतर हथियार है। बच्चे इससे अपनी पूरी सुरक्षा कर सकते हैं। यह बात ताइक्वांडो सेल्फ डिफेंस एकेडमी एसएएफ मैदान में रविवार को कलर बेल्ट परीक्षा के अवसर पर आयोजित विधिक जागरूकता शिविर में बच्चों को विधिक जानकारी देते हुए न्यायाधीश महेश कुमार त्रिपाठी ने कही।

पालिका अध्यक्ष अखिल महेश्वरी ने कहा कि नगर में ताइक्वांडो जैसी संस्था चलाकर राहुल गुप्ता व सोनू आशीष गर्ग बच्चों को लाभान्वित कर रहे हैं। उनके इस कार्य में रवि शरण तिवारी का भी विशेष सहयोग है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार जगदीश शुक्ला, जेपी पाराशर, यूनुस खान भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने विशेष स्टेप दिखाकर अतिथियों की वाह वाही भी लूटी। राहुल गुप्ता एवं सोनू आशीष गर्ग ने बताया कि 50 ताइक्वांडो खिलाड़ियों ने कलर बेल्ट की परीक्षा पास की है। 10 खिलाड़ियों को ब्लैक बेल्ट एवं प्रमाण पत्र भी प्राप्त हुए हैं। कार्यक्रम का संचालन रविशरण तिवारी ने किया। इस दौरान सांदीपनि विद्यालय के खेल शिक्षक मनोज वशिष्ठ, जिला सचिव राहुल गुप्ता सहित बच्चे उपस्थित रहे।

50 स्कूलों के छात्रों ने किया श्रमदान

शिवपुरी

ऐतिहासिक नगरी नरवर में रविवार को नरवर किले पर विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। अभियान का उद्देश्य किले को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखना था। यह कार्यक्रम प्राइवेट स्कूल्स एसोसिएशन एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से आयोजित किया गया।

स्वच्छता अभियान की शुरुआत नरवर के खम्मी बाजार से हुई, जो ऐतिहासिक नरवर किले तक पहुंचा। इसके बाद किले परिसर एवं पसरदेवी माता मंदिर क्षेत्र में साफ-सफाई की गई। इस दौरान स्वच्छता को लेकर जागरूकता गतिविधियां भी आयोजित की गईं।

अभियान में लगभग 200 लोगों एवं 50 स्कूलों के विद्यार्थियों ने श्रमदान किया। जन भागीदारी समिति के अध्यक्ष धीरज गुप्ता ने कहा कि नरवर किला केवल एक ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि क्षेत्र की पहचान है।

देश के विभिन्न हिस्सों से पर्यटक यहां आते हैं, इसलिए किले एवं आसपास के धार्मिक स्थलों की स्वच्छता बनाए रखना सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने नरवर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से गंदगी न फैलाने की अपील की, ताकि यहां से स्वच्छता का सकारात्मक संदेश जाए। इस अवसर पर प्राइवेट स्कूल्स एसोसिएशन नरवर-मंगरौनी के ब्लॉक अध्यक्ष पंकज कुशवाह, उपाध्यक्ष सिरदार सिंह कुशवाह, सचिव संजय भार्गव, कोषाध्यक्ष नवीन जैन एवं विधायक प्रतिनिधि पोहरी अशोक रावत सहित अनेक गणमान्य नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं युवा उपस्थित रहे। आयोजकों ने बताया कि भविष्य में भी ऐसे स्वच्छता अभियान नियमित रूप से चलाए जाएंगे।

बोर्ड परीक्षाएं आज से, संवेदनशील परीक्षा केन्द्रों पर रहेगी कड़ी नजर

मुरैना

माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी की बोर्ड परीक्षाएं 10 फरवरी से 7 मार्च तक संपन्न होंगी। इस संबंध में जिलाधीश लोकेश कुमार जांगिड़ ने 76 परीक्षा केन्द्रों में से 55 केन्द्रों को संवेदनशील और अति संवेदनशील परीक्षा केन्द्र घोषित किया है। इन केन्द्रों पर माध्यमिक शिक्षा मंडल के नियमानुसार प्रेक्षकीय कार्य के लिए प्रेक्षक नियुक्त किए हैं। ये पूरे समय परीक्षा केन्द्र पर रहकर निगरानी बनाए रखेंगे।

जानकारी के अनुसार संवेदनशील, अतिसंवेदनशील परीक्षा केन्द्रों पर हायर सैकेण्ड्री के मुख्य विषय अंग्रेजी, गणित, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, अर्थ शास्त्र एवं हाईस्कूल के मुख्य विषय अंग्रेजी, विज्ञान, गणित एवं सामाजिक विज्ञान की परीक्षा दिवसों में प्रेक्षकीय कार्य किया जाना है। प्रेक्षक को परीक्षा अवधि में परीक्षा केन्द्र पर मोबाइल फोन का उपयोग पूर्णत: प्रतिबंधित रहेगा। परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा प्रारंभ होने के एक घंटे के पूर्व से लेकर उत्तरपुस्तिकाओं को निर्धारित थाने में जमा कराने तक उपस्थित रहेंगे। नियुक्त प्रेक्षक प्रतिदिन अपनी उपस्थिति जिला शिक्षा कार्यालय में स्थापित कंट्रोल रूम का मोबाइल नम्बर 9893029266 व 9826711875 पर तथा एस.एम.एस. से दर्ज कराएंगे।

परीक्षा केन्द्र पर प्रेक्षक अपनी उपस्थिति में प्रश्न-पत्रों के बॉक्स निर्धारित समयानुसार खुलवाएंगे। प्रेक्षक यह भी सुनिश्चित करेंगे कि निर्धारित समयावधि में प्रश्न पत्र के सील्ड लिफाफे निर्धारित समय से पूर्व शिक्षकों को आवंटित, प्रदाय नहीं किये जायें। प्रेक्षक को परीक्षा तिथियों में परीक्षा समाप्ति के उपरांत प्रतिवेदन एवं अन्य समस्त जानकारियों बोर्ड की बेवसाइट पर अवलोड करेंगे। किसी प्रकार की गंभीर घटना होने पर तत्काल जिलाधीश कार्यालय, पुलिस कंट्रोल रूम, जिला शिक्षा अधिकारी एवं माध्यमिक शिक्षा मंडल के संबंधित संभागीय कार्यालय को सूचित करेंगें। संवेदनशील, अति संवेदनशील परीक्षा केन्द्रों पर जिलाधीश द्वारा नियुक्त प्रेक्षक प्रतिदिन आठ बजे परीक्षा केन्द्र पर उपस्थित रहेंगे। केन्द्राध्यक्ष एवं जिलाधीश प्रतिनिधि द्वारा थाने से प्रश्न-पत्र निकालकर परीक्षा केन्द्र पर पहुंचने पर बॉक्स को सील्ड एवं सुरक्षित होने की पुष्टि करेंगे। बॉक्स में छेड़छाड़ पाये जाने की स्थिति में तत्काल जिलाधीश एवं सचिव, माध्यमिक शिक्षा मंडल को अवगत करायेंगे।

प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान करना चाहिए

पोरसा। चंचल मन वाला व्यक्ति जीवन में कुछ नहीं कर पाता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान करना चाहिए। अपने मन को भगवान में लगाना चाहिए। जिससे प्रारब्ध बन जाएगा। प्रारब्ध से भविष्य सुंदर हो जाएगा और परिवार में खुशहाली आएगी। यह बात ब्रह्माकुमारी आश्रम पर रेखा बहन ने कही। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय गांधी नगर पोरसा के मुख्य सेवा केन्द्र गांधीनगर में आज रेखा बहन द्वारा राज योग ध्यान का अभ्यास कराया गया। जिसमें उन्होंने बताया कि राजयोग ध्यान का अर्थ अपने मन को भगवान के ध्यान में लगाना है। जब हमारा मन एक की लगन में मग्न हो जाए। उसी को राज योग ध्यान कहा जाता है।

निःसंतान दंपतियों के लिए लगाया शिविर

अंबाह

आचार्य आनंद क्लब द्वारा रविवार को स्वस्थ महिला-स्वस्थ परिवार अभियान के अंतर्गत नि:शुल्क नि:संतान दंपति जांच शिविर का आयोजन ब्राइट कैरियर परिसर में किया गया। शिविर का शुभारंभ डॉ. सुधीर आचार्य, डॉ. सुशील फिजियोथैरेपिस्ट, मुख्य प्रशिक्षक विश्वनाथ गुर्जर, दुष्यंत सिंह तोमर, अरविंद मावई ने किया।

शिविर में ग्वालियर से आईं डॉ. नेहा प्रेमी अग्रवाल ने महिलाओं से चर्चा करते हुए कहा कि बांझपन एक ऐसी समस्या है जिसमें पुरुष या महिला के शरीर में कुछ समस्याएं होती हैं जो गर्भधारण को रोकती हैं। यहां कुछ सावधानियां हैं जो बांझपन को रोकने में मदद कर सकती हैं। दंपति के लिए अधिक वजन या कम वजन बांझपन का कारण बन सकता है।

धूम्रपान और शराब का सेवन भी बांझपन को बढ़ा सकता है। साथ ही तनाव भी बांझपन का एक आम कारण है। इससे बचाव के लिए नियमित व्यायाम करें, स्वस्थ आहार लें। डॉ. नेहा प्रेमी ने कहा कि तनाव मुक्त, हेल्थी डाइट और वर्क लाइफ स्टाइल संतुलित करके संतान सुख पाया जा सकता है। डॉ. नेहा प्रेमी ने बताया कि निसंतान दंपति तनाव ना लें और नियमित जांच कराएं। नियमित जांच बांझपन को रोकने में मदद कर सकती है। शिविर का संचालन बालकृष्ण शर्मा ने किया।

शिक्षा के साथ संस्कार भी आवश्यक: पुरोहित

भिण्ड

ज्ञान का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं, ज्ञान वह है जिसमें शिक्षा के साथ संस्कार भी हों। वर्तमान में देखने में आ रहा है कि व्यक्ति डिग्री हासिल करके अच्छे पद पर तो पहुंच जाता है। किंतु संस्कारों के अभाव में सामने वाले व्यक्ति को तुच्छ समझता है। इसलिए व्यक्ति में शिक्षा के साथ संस्कार का होना भी अति आवश्यक है। यह विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी रामशरण पुरोहित ने शासकीय कन्या महाविद्यालय भिण्ड द्वारा गोद ग्राम मंगदपुरा में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के सात दिवसीय विशेष शिविर के चौथे दिन मुख्य अतिथि की आसंदी से व्यक्त किए। इस अवसर पर रासेयो प्रभारी दीक्षा साहू एवं सुधीर कुमार जोशी भी मंचासीन थे। मुख्य अतिथि श्री पुरोहित ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें पाश्चात्य सभ्यता की बजाय अपनी भारतीय सभ्यता, भाषा, भोजन, भजन अपनाना चाहिए क्योंकि अपनी सभ्यता में जो भाव है वह पश्चात्य सभ्यता में नहीं। उन्होंने उदाहरण देकर बताया कि पश्चात्य सभ्यता में चाचा, मामा, ताऊ, फूफा आदि को केवल अंकल कहकर ही बुलाया जाता है जबकि हमारी भारतीय सभ्यता में पिता के छोटे भाई को चाचा, बड़े भाई को ताऊ, बुआ के पति को फूफा कहकर संबोधित किया जाता है। जिससे रिश्तों में भाव प्रकट होता है। उन्होंने भोजन के विषय पर कहा कि हमें अपने देशी भोजन को ही अपनाना चाहिए। जिससे शरीर स्वस्थ रहता है, वलिष्ठ बनता है, मस्तिष्क में अच्छे विचार उत्पन्न होते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि हमें प्लास्टिक का उपयोग भी कम करना चाहिए और उपयोग के पश्चात उसे यहां-वहां न फेंककर उसका निपटान करना चाहिए। इसके अलावा अपने घर में तुलसी का पौधा अवश्य लगाना चाहिए। जिससे घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है। साथ ही अपने किचन गार्डन में सब्जियों एवं फलों का जैविक उत्पादन करना चाहिए।

अतिथियों का स्वागत सुधीर कुमार जोशी ने पुष्पमाला से किया। छात्राओं ने बैज लगाकर अतिथियों का अभिनंदन किया। अंत में मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम अधिकारी प्रो. दीक्षा साहू ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। शिविर में पूर्व पार्षद प्रदीप नरवरिया, ग्राम की मातृशक्ति, ग्रामीणजन भी मौजूद थे।

छात्राओं ने किया कौशल कला का प्रदर्शन

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में भाग ले रहीं छात्राओं ने इस अवसर पर अपनी कौशल कला का प्रदर्शन किया। जिसमें उन्होंने शिविर में अभी तक हुईं गतिविधियों की कलाकृति के अलावा गुलदस्ता, वीणा, पालना, पेंटिंग सहित लगभग एक दर्जन कला कृतियां बनाईं। जिनका अतिथियों ने अवलोकन कर छात्राओं की कला की सराहना की। इसके अलवा छात्राओं ने भजनों की प्रस्तुतियां भी दीं। प्रतियोगिता में छात्रा प्रज्ञा जैन बीए तृतीय वर्ष एवं सुनिधि दुबे ने शिविर दर्पण का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

मोबाइल, मानसिक सेहत और हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी

कांतिलाल मांडोत

गाजियाबाद की घटना ने एक बार फिर समाज को झकझोर दिया है। बच्चों और किशोरों की दुनिया में मोबाइल कैसे चुपचाप केंद्र बनता जा रहा है, यह सवाल किसी एक परिवार या एक शहर तक सीमित नहीं रहा। डिजिटल स्क्रीन ने सीखने, मनोरंजन और संवाद के नए रास्ते खोले हैं, लेकिन जब वही स्क्रीन वास्तविक रिश्तों, भावनात्मक सहारे और जीवन की जटिलताओं को समझने की क्षमता पर हावी हो जाए, तब जोखिम बढ़ जाता है। यह लेख किसी घटना का सनसनीखेज़ विवरण नहीं, बल्कि उस व्यापक परिदृश्य पर विचार है जिसमें बच्चे, परिवार, सरकार और समाज सबकी साझा ज़िम्मेदारी बनती है।

आज का बच्चा बहुत जल्दी स्क्रीन से परिचित हो जाता है। छोटे हाथों में स्मार्टफोन, टैबलेट और टीवी रिमोट अब असामान्य नहीं हैं। वैश्विक और भारतीय अध्ययनों से संकेत मिलते हैं कि लंबे समय तक स्क्रीन के संपर्क में रहने से नींद, ध्यान, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक व्यवहार प्रभावित होते हैं। जब स्क्रीन टाइम बढ़ता है, तो खेल, पढ़ाई, परिवार के साथ बातचीत और खुले वातावरण में बिताया समय घटता है। यह कमी धीरे-धीरे भावनात्मक अकेलेपन और चिड़चिड़ेपन को जन्म देती है, जिसे कई बार बच्चे खुद शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते।

मानसिक स्वास्थ्य पर इसका असर विशेष चिंता का विषय है। शोध बताते हैं कि बहुत अधिक स्क्रीन टाइम वाले बच्चों में उदासी, निराशा और सामाजिक अलगाव के लक्षण अपेक्षाकृत अधिक

मानसिक स्वास्थ्य पर इसका असर विशेष चिंता का विषय है। शोध बताते हैं कि बहुत अधिक स्क्रीन टाइम वाले बच्चों में उदासी, निराशा और सामाजिक अलगाव के लक्षण अपेक्षाकृत अधिक दिखते हैं। नींद की कमी इस प्रभाव को और गहरा करती है। देर रात तक स्क्रीन पर रहने से शरीर की प्राकृतिक घड़ी बिगड़ती है, जिससे अगले दिन थकान और भावनात्मक असंतुलन बढ़ता है। यह कोई सीधी रेखा नहीं कि हर स्क्रीन देखने वाला बच्चा संकट में होगा, लेकिन जोखिम का स्तर अवश्य बढ़ता है, खासकर तब जब स्क्रीन का उपयोग बिना मार्गदर्शन और संवाद के हो। डिजिटल संस्कृति के साथ वैश्विक पॉप ट्रेंड्स का आकर्षण भी बढ़ा है। कोरियाई ड्रामा, संगीत, भाषा और भोजन के प्रति भारत में रुचि तेज़ी से बढ़ी है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान अपने आप में सकारात्मक हो सकता है, लेकिन जब आभासी दुनिया वास्तविक जीवन की अपेक्षाओं का स्थान लेने लगे, तब भ्रम पैदा होता है। आदर्श जीवन, परफेक्ट रिश्ते और चमकदार छवियां बच्चों के मन में तुलना और असंतोष को जन्म दे सकती हैं। यह भी याद रखना ज़रूरी है कि जिन देशों की पॉप संस्कृति लोकप्रिय है, वहां भी मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियां मौजूद हैं। खुशी के सूचकांक और सामाजिक भरोसे में गिरावट जैसे तथ्य बताते हैं कि चमकदार परदे के पीछे की सच्चाई कहीं अधिक जटिल है।

ऐसे में सवाल उठता है कि समाधान क्या है। सबसे पहले, सरकार की भूमिका पर बात ज़रूरी है। डिजिटल इंडिया के दौर में बच्चों की डिजिटल सुरक्षा और मानसिक सेहत को नीति की प्राथमिकता बनाना होगा। स्कूल पाठ्यक्रम में डिजिटल साक्षरता को केवल तकनीकी कौशल तक सीमित न रखकर स्क्रीन के स्वस्थ उपयोग, ऑनलाइन व्यवहार, भावनात्मक स्व-नियंत्रण और मदद मांगने की संस्कृति तक विस्तारित करना चाहिए। सरकारी स्कूलों से लेकर निजी संस्थानों तक, काउंसलिंग सेवाओं की पहुंच बढ़ानी होगी, ताकि बच्चे बिना डर अपनी बात कह सकें। बाल-अनुकूल हेल्पलाइन, समुदाय आधारित मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम और शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण, यह सब मिलकर एक सुरक्षा-जाल बना सकते हैं।

नियमन का प्रश्न भी उतना ही महत्वपूर्ण है। बच्चों के लिए कंटेंट रेटिंग, विज्ञापन नियंत्रण और गेमिंग प्लेटफॉर्म्स पर आयु-उपयुक्त सुरक्षा उपायों को सख्ती से लागू करना होगा। टेक कंपनियों के साथ साझेदारी कर 'डिफ़ॉल्ट' स्क्रीन-लिमिट, ब्रेक रिमाइंडर और रात के समय नोटिफ़िकेशन नियंत्रण जैसे फीचर्स को बढ़ावा दिया जा सकता है। साथ ही, सार्वजनिक अभियानों के ज़रिये यह संदेश पहुंचाना होगा कि स्क्रीन का संतुलित उपयोग ही लाभकारी है, असीमित नहीं।

पर सरकार अकेले यह लड़ाई नहीं जीत सकती। घर वह पहली जगह है जहां बच्चे दुनिया को समझते हैं। अभिभावकों की भूमिका निर्णायक है। मोबाइल को पूरी तरह प्रतिबंधित करना व्यावहारिक नहीं, लेकिन स्पष्ट सीमाएं तय करना आवश्यक है। उम्र के अनुसार स्क्रीन टाइम, सोने से पहले स्क्रीन बंद करने की आदत, और सप्ताह में कुछ घंटे 'डिवाइस-फ्री' समय तय करना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हैं। इससे भी ज़्यादा ज़रूरी है संवाद। बच्चों से केवल नियम न कहें, उनके अनुभव सुनें। वे क्या देख रहे हैं, क्यों पसंद कर रहे हैं, उससे उन्हें कैसा महसूस होता है।इन सवालों पर खुली बातचीत विश्वास बनाती है।अभिभावक स्वयं उदाहरण बनें तो असर दोगुना होता है। यदि घर में बड़े लोग भी हर खाली पल स्क्रीन पर बिताते हैं, तो बच्चों से संयम की उम्मीद करना कठिन है। परिवार के साथ भोजन, खेल, किताब पढ़ना या बाहर टहलना, ये सब साधारण लगते हैं लेकिन भावनात्मक सुरक्षा का आधार बनते हैं। बच्चों की रुचियों को ऑफ़लाइन गतिविधियों से जोड़ना, जैसे खेल, संगीत, कला या सामाजिक सेवा, उन्हें संतुलन सिखाता है और आत्मविश्वास बढ़ाता है।

स्कूलों की जिम्मेदारी भी कम नहीं। शिक्षा केवल अंकों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। भावनात्मक शिक्षा, सहानुभूति, टीमवर्क और समस्या-समाधान जैसे कौशलों को कक्षा का हिस्सा बनाना होगा। शिक्षक यदि बदलाव के शुरुआती संकेत पहचान सकें और सही समय पर अभिभावकों व विशेषज्ञों से जोड़ सकें, तो कई संकट टल सकते हैं। प्रतिस्पर्धा के दबाव को कम करने और विविध प्रतिभाओं को मान्यता देने से भी बच्चों पर अनावश्यक तनाव घटता है।

समाज के स्तर पर हमें उस धारणा को चुनौती देनी होगी कि ऑनलाइन लोकप्रियता ही सफलता है। बच्चों को यह समझाना होगा कि जीवन बहुआयामी है, और असफलताएं सीखने का हिस्सा हैं। मीडिया की भी जिम्मेदारी है कि संवेदनशील मुद्दों को संतुलित और जिम्मेदार ढंग से प्रस्तुत करे, ताकि भय या भ्रम न फैले और समाधान की दिशा में चर्चा हो। अंततः, स्क्रीन न तो शत्रु है और न ही समाधान। वह एक उपकरण है, जिसका उपयोग समझदारी से हो तो सीख और रचनात्मकता का साधन बन सकता है, और बिना संतुलन के हो तो जोखिम बढ़ा सकता है। बच्चों की भलाई के लिए सरकार की नीतियां, स्कूलों की संवेदनशीलता, अभिभावकों का संवाद और समाज का सहयोग , इन सबका संगम आवश्यक है। जब हम बच्चों को सुनते हैं, सीमाएं प्यार से तय करते हैं और उन्हें वास्तविक दुनिया के रिश्तों से जोड़ते हैं, तभी डिजिटल युग में उनका बचपन सुरक्षित और सशक्त बन सकता है।

विचार मंथन

कौन जिम्मेदार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संसद के अंदर सुरक्षित नहीं हैं। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का इस आशय का कथन अपने आप में गंभीर है। संसद केवल एक भवन नहीं है, लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था है। संसद में नागरिकों की रक्षा के लिए नियम और कानून बनाए जाते हैं। उन्हीं नियमों और कानूनों से कार्यपालिका नागरिकों को यह भरोसा दिलाती है कि सरकार उनके हित में काम कर रही है। सरकार उनकी सुरक्षा, उनके जीवन-यापन तथा शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे विषयों पर काम कर रही है। 1947 के बाद से आम जनता का भरोसा संसद पर बना हुआ है। यदि उसी संसद मे सदन का नेता सुरक्षित नहीं है? इस लोकसभा के अध्यक्ष जो सदन मे सभी निर्वाचित सदस्यों के संरक्षक हैं। संविधान ने उन्हें सत्ता पक्ष और विपक्ष को संविधान का पालन कराने का अधिकार दिया हुआ है। यदि वह इस तरह की बात करते हैं, तो निश्चित रूप से 140 करोड़ जनता के मन में यह सवाल उठता है, यदि इतनी सुरक्षा प्राप्त प्रधानमंत्री सदन के अंदर सुरक्षित नहीं हैं, जिस सदन में मार्शल हटाकर सीआरपीएफ सुरक्षा बल के जवान लगाए गए हैं। ऐसी स्थिति में आम नागरिकों का क्या होगा? यदि यह आरोप सार्वजनिक विचार-विमर्श का हिस्सा बनता है तो उसका असर केवल सुरक्षा बहस तक सीमित नहीं रहता बल्कि वह राजनीतिक संदेश, संसदीय मर्यादा] जनविश्वास और विश्व में भारत के लोकतंत्र को लेकर सवाल वाली स्थिति बनती है। यहां पर सवाल प्रधानमंत्री की सुरक्षा का है। संसद देश के सबसे सुरक्षित स्थलों में मानी जाती है। बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था, खुफिया निगरानी और प्रोटोकॉल पहले से मौजूद हैं। ऐसे में यदि कोई नेता विशेषकर प्रधानमंत्री सदन के अंदर असुरक्षित हैं, तो यह सुरक्षा एजेंसियों, लोकसभा सचिवालय और लोकसभा अध्यक्ष के लिए चिंता और समीक्षा का विषय है। लोकसभा अध्यक्ष के ऊपर सदन की तथा सदस्यों की सुरक्षा और उनके कार्य प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका है। सदन की गरिमा और सुरक्षा सुनिश्चित करना उनकी जिम्मेदारी है। यदि वही कहते हैं कि प्रधानमंत्री सदन के अंदर सुरक्षित नहीं है। ऐसे में यह उनकी ही अक्षमता का प्रमाण माना जा सकता है। उन्हें राजनीतिक दबाव से ऊपर उठकर तथ्यों के आधार पर स्थिति को बिना किसी भेदभाव के स्पष्ट करनी चाहिए। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर लोकसभा में प्रधानमंत्री का नहीं बोलना और लोकसभा अध्यक्ष का यह कहना कि प्रधानमंत्री के ऊपर हमला हो सकता था, इसलिए उन्होंने उन्हें सदन में आने से मना किया था। लोकसभा अध्यक्ष का यह कथन स्वयं लोकसभा अध्यक्ष और सत्तापक्ष के लिए दोधारी तलवार बन गया है। इससे सत्ता पक्ष के समर्थकों में यह संदेश जायेगा कि प्रधानमंत्री निरंतर खतरे में रहकर भी काम कर रहे हैं।

युवकत्व की पहचान

मनुष्य स्वतंत्र संकल्प का स्वामी होता है। उसका संकल्प जैसा होता है, व्यक्तित्व भी वैसा ही नाझमत हो जाता है। सृजन और ध्वंस के संस्कार मनुष्य के भीतर होते हैं। उन संस्कारों को वह संकल्पशक्ति के सहारे बदल सकता है। जिस व्यक्ति में विधायक भावों की प्रचुरता होता है वह ध्वंसात्मक संस्कारों को सृजनशीलता में बदल लेता है।

निषेधात्मक भाव व्यक्ति को क्रूरता, हिंसा, अनुशासनहीनता, असदाचार की दिशा में प्रेरित करते हैं। जिस राष्ट्र और समाज में हिंसा का बोलबाला होता है, रास्ते चलते बेगुनाह लोगों को मौत के घाट उतार दिया जाता है, वह उस राष्ट्र और समाज का दुर्भाग्य होता है। उस दुर्भाग्य से बचने के लिए अहिंसक शक्तियों को जगाने और संगठित बनाने की जरूरत है। यह सच है कि हिंसक वारदातें आदमी के मन में दहशत पैदा कर देती हैं। दहशत की स्थिति में कोई भी व्यक्ति न तो सही ढंग से सोच सकता है और न ही अपनी क्षमताओं का उपयोग कर सकता है। भयोत्पादक परिस्थितियों का प्रभाव बच्चों और वृद्धों पर अधिक होता है। युवकों में भय की मात्रा कम होती है। वे जान-बूझकर खतरों को मोल लेते हैं। उनकी मानसिकता साहसिक काम करने की रहती है, किंतु इसमें भी विवेक की अपेक्षा है। विवेक के अभाव में युवक कुछ ऐसे काम कर लेता है, जो उसे उम्र से कई वर्ष आगे ढकेल कर जर्जर बना देते हैं।

देश की युवा पीढ़ी सही अर्थ में अपने यौवन को सुरक्षित रखना चाहे और कोई कीर्तिमान स्थापित करना चाहे तो उसे प्रतिस्रोतगामी बनना होगा। अनुस्रोत में बहना सरल होता है। एक पतला-सा तिनका भी प्रवाह में बह जाता है, पर विपरीत दिशा में बहने के लिए शक्ति की जरूरत होती है।

भगवा बनाम भगवा और संत बनाम संत का कैसे होगा अंत

ऋतुपर्ण दवे

यह सच है कि दिल्ली की सत्ता का रास्ता ज्यादातर उत्तरप्रदेश से ही होकर निकलता है। यह भी सच है कि भले ही देश में नरेन्द्र मोदी को लेकर कोई विकल्प न हो लेकिन उनके उत्तराधिकारी के रूप में अघोषित रूप से योगी आदित्यनाथ का नाम सबसे पहले आता है। वहीं अक्सर सियासत में कहे.अनकहे ऐसे दांव.पेंच चले जाते हैं या हो जाते हैं जिससे आसान राहें भी मुश्किलें बढ़ाती नजर आने लगती हैं। फिलाहाल उत्तरप्रदेश में चुनावी सरगर्मी तो नहीं है लेकिन राजनीतिक सरगर्मी ने पहले पौष की कड़कड़ती ठण्ड और अब माघ की जाती ठण्ड में भी जबरदस्त और इतनी कि लू सरीखे सियासी तपन का अहसास जरूर करा दिया।

दरअसलए उत्तराखंड के ज्योतिर्मठ के प्रमुख स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती का 28 जनवरी को माघ मेला में स्नान किए बिना लौटना भले ही एक धार्मिक मामला हो। लेकिन वास्तव में सियासी ज्यादा रहा। नए वर्ष की शुरुआत में ही उत्तरप्रदेश में श्भगवा बनाम भगवाश् का मुद्दा जबरदस्त राजनीतिक और धार्मिक विमर्श का अहम मुद्दा रहा। लेकिन इसका यह आशय नहीं कि अब सब कुछ ठीक हो गया है। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के स्नान और पालकी सहित जाने की जिद और प्रशासन के नहीं जाने देने से उत्पन्न विवाद इतना बड़ा तूल पकड़ेगाए इसका जनमानस को जरूर अंदाजा नहीं रहा। हाँए सियासतदारों को जरूर बैठेए बिठाए बड़ा मौका मिल गया।

वास्तव में अविमुक्तेश्वरानंद अक्सर अपने बयानों को लेकर सुर्खियों में रहते हैं। वो किसी को भी नहीं छोड़ते ऐसी स्थिति में उनसे इस टकराहट को असाधारण माना जा रहा है। यदि वास्तव में प्रयागराज मेला प्रशासन चाहता तो इसे टाल सकता था लेकिन कहते हैं न कि राजनीति में लिए गए छोटे से छोटे फैसलों के दूरगामी परिणाम मतलब भरे होते हैं। हुआ भी वही। अब लोग भले ही यह कहें कि सरकार ने गलत किया या स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने। लेकिन सच तो यह है कि इसे प्रशासन की चूक या भूल भी कहना बेमानी होगा।

एक ओर रूठे हुए स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद धरने पर बैठ गए तो दूसरी ओर मुख्यमंत्री योगी ने शंकराचार्य विवाद के दौरान ही सीधे नाम न लेकरए सनातन धर्म की आड़ में राष्ट्रविरोधी या सनातन विरोधी एजेंडा चलाने वालों को श्कालनेमिश् कह दिया। जाहिर है इशारा अविमुक्तेश्वरानंद पर था। बाद में प्रयागराज में जो घटाए उसे देश ने देखा। बात असली और नकली शंकराचार्य तक जा पहुंची तो भला अविमुक्तेश्वरानंद कैसे चुप रहतेघ् उन्होंने भी सीधे.सीधे आदित्यनाथ से टकराने की रणनीति अपना ली। इस बीच प्रशासन ने शंकराचार्य को नोटिस पकड़ा दिया कि 18 जनवरी को त्रिवेणी संगम में जबरदस्ती घुसने के प्रयास से भगदड़ मच सकती थी। इतना ही नहीं यह तक पूछ लिया कि क्यों न उन्हें भविष्य के मेलों में भाग लेने से रोक दिया जाएघ् तल्खी और तब बढ़ी जब अगले नोटिस में मेला अधिकारियों ने 2022 के सुप्रीम कोर्ट के आदेश का हवाला देते हुए शंकराचार्य की उपाधि पर ही सवाल उठाए विवाद को गहरा दिया। ऐसा देश ने पहली बार देखा। शह.मात के इस खेल में स्वामी अविमुक्तेश्वरनद ने अपने जवाब में उल्टा पूछ लिया कि ष्ना प्रशासनए ना उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्रीए और ना ही देश के राष्ट्रपति तय करेंगे कि कौन शंकराचार्य होघ् हालांकि शंकराचार्य पर आरोप लगे कि वो कांग्रेसी विचारधारा के हैं। लेकिन उन्होंने राहुल गांधी को भी नहीं छोड़ा। मामले ने तब और तूल पकड़ा जब समाजवादी पार्टी ने उनका समर्थन किया और कई बड़े नेताओं ने मुलाकात की। निश्चित रूप से वक्त के साथ शंकराचार्य विवाद राजनीतिक रूप ले चुका था। जिसमें कई मोड़ आए। एक ओर जहां पूर्व केंद्रीय मंत्री उमा भारती ने भी विश्वास व्यक्त किया कि स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी महाराज और उत्तरप्रदेश सरकार के बीच कोई सकारात्मक समाधान निकलेगा वहीं प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने उनसे स्नान करने की अपील की और कहा कि मैं ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के चरणों में प्रणाम करता हूंए उनसे प्रार्थना है कि वह स्नान कर इस विषय का समापन करें। लेकिन यह हो न सका। बस यहीं से जो मामला भगवा बनाम भगवा था उसे पार्टी लाइन की ओर भी समझा जाने लगा। उत्तरप्रदेश में भाजपा की गुटबाजी जगजाहिर है। यह तब और समझ में आई जब बीते महीने 30 जनवरी को महोबा विधायक में भाजपा विधायक बृजभूषण राजपूत और योगी कैबिनेट के मंत्री स्वतंत्र देव सिंह आपस में तकरार हो गई। मंत्री एक कार्यक्रम से लौट रहे थे कि दोपहर करीब साढ़े तीन बजे विधायक ने 100 ग्राम प्रधानों के साथ मिलकर उनका रास्ता रोक लिया और 100 गांवों में पानी न पहुंचने और पाइपलाइन के लिए खोदी गई सड़कों की मरम्मत न होने पर नाराजगी जताई। इसी तरह केशव प्रसाद मौर्य का बयान आना कोई सामान्य घटना नहीं है। बहरहाल इस पर भाजपा की ओर से कोई प्रतिक्रया नहीं आई लेकिन मौर्य का निवेदन हाईकमान का रुख माना जा रहा है तो ज़िला प्रशासन का ऐक्शन योगी सरकार का कदम। यकीनन ऐसी घटनाओं के पीछे बड़ी सियासत होगी जो आम लोगों की समझ से बाहर है। वैसे सबको पता है कि कैसी कवायद से योगी पहली बार मुख्यमंत्री बने थे। उसके बाद उनकी कार्यप्रणाली से उनका कद लगातार बड़ा होता चला गया।

शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने 28 जनवरी को दुखी मन से वाराणसी से विदा ली और बिना स्नान लौट गए। घटना को अकल्पनीय बताया। हालांकि संतों में भी दो परस्पर विरोधी गुट बन गए। वही अविमुक्तेश्वरानंद भी कमर कस के तैयार हैं। उन्होंने उत्तरप्रदेश में गाय को राजमाता का दर्जा दिलाने और गौ हत्या रोकने के लिए 40 दिनों की मोहलत दी जिस पर संत परमहंसाचार्य ने इसे राजनीति से प्रेरित बता कहा कि केवल गाय नहीं पूरा गौवंश ;बैलए बछड़ाए नंदीद्ध को राष्ट्रीय धरोहर घोषित हो तभी पूर्ण गौ.रक्षा संभव है।

बहरहाल योगी आदित्यनाथ और शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद की इस जुबानी जंग को लोग ऊंचे दर्जे की राजनीति से भी जोड़कर देख रहे हैं। राजनीतिक गलियारों में कुछ इसे केन्द्र और राज्य के बीच का मसला समझते हैं तो कुछ इसे योगी आदित्यनाथ के बढ़ते कद से जोड़कर देख रहे हैं। बहरहाल ऐसी घटनाओं से अपने आप ही समझ आता है कि माजरा क्या हैघ् अब देखना है कि अगले वर्ष उत्तरप्रदेश में चुनाव हैं ऐसे में भगवा बनाम भगवा और संत बनाम संत की इस लड़ाई में किसेए कितना नफा.नुकसान होता है क्योंकि इतने बड़े मसले पर भाजपा केन्द्रीय नेतृत्व या पार्टी की चुप्पी भी बड़ा इशारा जरूर करती है।

आखिर क्यों चर्चा में है खेजड़ी बचाओ जन-आंदोलन

सुनील कुमार महला

इन दिनों राजस्थान में खेजड़ी बचाओ जन-आंदोलन खास चर्चा में है। दरअसल, खेजड़ी बचाओ जन-आंदोलन राजस्थान के राज्य वृक्ष 'खेजड़ी' के संरक्षण के लिए चलाया जा रहा एक जन-आंदोलन है। वास्तव में यह आंदोलन सोलर कंपनियों द्वारा पेड़ों की कटाई के कारण चर्चा में आया। आंदोलनकारियों का आरोप है कि राजस्थान के बीकानेर और आसपास के इलाकों में सोलर पावर प्रोजेक्ट्स स्थापित करने के लिए कंपनियां बड़े पैमाने पर खेजड़ी के पेड़ों की कटाई कर रही हैं। यह भी आरोप लगाया गया कि पकड़े जाने के डर से पेड़ों को रात के अंधेरे में काटकर जमीन में दबा दिया जाता है।

आंदोलनकारियों की मुख्य मांगें स्पष्ट हैं। वे पूरे राजस्थान में खेजड़ी की कटाई पर पूर्ण प्रतिबंध चाहते हैं। इसके साथ ही राज्य में एक प्रभावी 'ट्री प्रोटेक्शन एक्ट' लागू करने की मांग की जा रही है, जिसमें अवैध कटाई पर भारी जुर्माने (?1 लाख तक) और जेल की सजा का प्रावधान हो। आंदोलनकारियों का यह भी कहना है कि सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए ऐसी जमीनों का ही आवंटन किया जाए, जहां पहले से हरे-भरे पेड़ मौजूद न हों।

यहां पाठकों को बताना जरूरी है कि इस आंदोलन की मुख्य और प्रभावी शुरुआत हाल ही में 2 फरवरी 2026 को राजस्थान के बीकानेर जिले से हुई। हालांकि बीकानेर कलेक्ट्रेट और करणीसर भाटियान क्षेत्र में पिछले लगभग एक महीने से शांतिपूर्ण धरने और प्रदर्शन चल रहे थे, लेकिन फरवरी 2026 के पहले सप्ताह में इसे 'महा-आंदोलन' का रूप मिला।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार 2 फरवरी 2026 को बीकानेर के पॉलिटेक्निक कॉलेज मैदान में हजारों पर्यावरण प्रेमियों, संतों और बिश्नोई समाज के लोगों का विशाल 'महापड़ाव' शुरू हुआ। इस दिन बीकानेर के बाजार पूरी तरह बंद रहे और स्कूलों में अवकाश घोषित किया गया। इसके अगले दिन, 3 फरवरी 2026 को, कलेक्ट्रेट के सामने 363 संतों और पर्यावरण प्रेमियों ने आंखों पर पट्टी बांधकर 'आमरण अनशन' प्रारंभ किया। यह संख्या ऐतिहासिक खेजड़ली बलिदान की स्मृति में प्रतीकात्मक रूप से चुनी गई थी।

मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार 5 और 6 फरवरी 2026 को आंदोलन के बढ़ते दबाव के बीच राज्य के उद्योग मंत्री के.के. बिश्नोई धरना स्थल पर पहुंचे। सरकार की ओर से जोधपुर और बीकानेर संभाग में खेजड़ी की कटाई पर तत्काल लिखित प्रतिबंध लगाने तथा विधानसभा में सख्त 'ट्री प्रोटेक्शन एक्ट' लाने के आश्वासन के बाद आमरण अनशन समाप्त किया गया।

यह भी उल्लेखनीय है कि इस जन-आंदोलन का मुख्य केंद्र बीकानेर रहा, लेकिन इसकी गूंज पूरे पश्चिमी राजस्थान(जोधपुर, जैसलमेर और बाड़मेर) में विशेष रूप से सुनाई दी। इस आंदोलन में न केवल राजस्थान, बल्कि हरियाणा, पंजाब और मध्य प्रदेश से भी बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। आंदोलन को पूर्व मुख्यमंत्रियों वसुंधरा राजे और अशोक गहलोत तथा हनुमान बेनीवाल जैसे प्रमुख नेताओं का भी समर्थन मिला, जिससे यह आंदोलन एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा बनकर उभरा।

फिलहाल आमरण अनशन समाप्त हो चुका है, लेकिन आंदोलनकारियों ने साफ चेतावनी दी है कि जब तक विधानसभा में कानून पारित नहीं हो जाता, तब तक उनका प्रतीकात्मक धरना यानी 'महापड़ाव' जारी रहेगा। उनकी मांग है कि खेजड़ी कटाई पर लगाया गया प्रतिबंध पूरे राजस्थान में प्रभावी रूप से लागू किया जाए।

यहां पाठकों को यह भी बताना आवश्यक है कि खेजड़ी संरक्षण का इतिहास राजस्थान की मिट्टी में गहराई से जुड़ा हुआ है। अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में वर्ष 1730 ईस्वी में 363 लोगों ने हरे पेड़ों को बचाने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। इन बलिदानियों में 69 महिलाएं और 294 पुरुष शामिल थे। खेजड़ली (जोधपुर) का यह बलिदान, वर्ष 1730 ईस्वी (विक्रम संवत 1787) में घटित, विश्व इतिहास की सबसे महान पर्यावरण संरक्षण घटनाओं में गिना जाता है। यह पेड़ों की रक्षा के लिए दिया गया पहला और सबसे बड़ा सामूहिक बलिदान माना जाता है।

इतिहास बताता है कि जोधपुर के तत्कालीन महाराजा अभय सिंह को अपने नए महल के निर्माण हेतु चूना पकाने के लिए बड़ी मात्रा में लकड़ी की आवश्यकता थी। इसके लिए उनके कारिंदे गिरधारी दास सैनिकों के साथ खेजड़ली गांव पहुंचे और खेजड़ी के हरे पेड़ों को काटने लगे। इसका अमृता देवी बिश्नोई ने कड़ा विरोध किया। उन्होंने सैनिकों को चुनौती देते हुए ऐतिहासिक नारा दिया-सिर साठे रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण। अर्थात यदि सिर कटने के बाद भी एक पेड़ बचता है, तो यह सौदा भी सस्ता ही समझा जाना चाहिए। पेड़ों को बचाने के लिए अमृता देवी सबसे पहले खेजड़ी के पेड़ से लिपट गईं। सैनिकों ने पेड़ के साथ उन्हें भी काट दिया। उनके बाद उनकी तीन बेटियां-आसू, रत्नी और भागू-और फिर उनके पति ने भी अपने प्राणों की आहुति दी। यह दृश्य देखकर पूरे गांव और आसपास के 84 गांवों के लोग उमड़ पड़े और एक-एक करके पेड़ों से लिपटते चले गए।

जब महाराजा अभय सिंह को इस भीषण नरसंहार की जानकारी मिली, तो उन्होंने तुरंत पेड़ों की कटाई रुकवाई और भविष्य के लिए एक ताम्रपत्र यानी राजकीय आदेश जारी किया, जिसमें बिश्नोई बहुल क्षेत्रों में कभी भी हरे पेड़ न काटे जाने का निर्देश दिया गया।

यह भी उल्लेखनीय है कि आधुनिक काल का 'चिपको आंदोलन', जिसके प्रणेता सुंदरलाल बहुगुणा थे, इसी खेजड़ली बलिदान से प्रेरित माना जाता है। भारत सरकार और राजस्थान सरकार पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को अमृता देवी के नाम पर 'अमृता देवी वन्य जीव पुरस्कार' (राष्ट्रीय पुरस्कार) भी प्रदान करती हैं। खेजड़ली गांव में आज भी एक भव्य शहीद स्मारक स्थित है, जहां हर वर्ष भाद्रपद शुक्ल दशमी को विश्व का एकमात्र 'वृक्ष मेला' आयोजित किया जाता है।

अंत में यह कहना उचित होगा कि खेजड़ी का केवल पर्यावरणीय ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व भी है। यह आंदोलन केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं है, बल्कि राजस्थान की संस्कृति और आस्था से गहराई से जुड़ा हुआ है। खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष है, जिसका वैज्ञानिक नाम 'प्रोसोपिस सिनेरेरिया' है। इसे 'रेगिस्तान का कल्पवृक्ष' कहा जाता है और यह थार मरुस्थल की पारिस्थितिकी की रीढ़ की हड्डी मानी जाती है।

गौरतलब है कि राजस्थान सरकार ने 31 अक्टूबर 1983 को खेजड़ी को राज्य वृक्ष घोषित किया था। इसका उद्देश्य थार मरुस्थल के पारिस्थितिकी तंत्र में इसके महत्व को देखते हुए इसके संरक्षण को बढ़ावा देना था।

यदि हम खेजड़ी वृक्षों से जुड़े आंकड़ों की बात करें, तो सरकार या किसी अन्य विश्वसनीय स्रोत द्वारा राज्य में खेजड़ी के कुल वृक्षों की वर्तमान आधिकारिक संख्या का कोई विस्तृत और ताजा डेटा सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। हालांकि कुछ हालिया रिपोर्टों और विधायकों के बयानों से इसकी स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार राजस्थान विधानसभा में एक स्थानीय विधायक ने यह बयान दिया कि पश्चिमी राजस्थान में पिछले 15 वर्षों में लगभग 26 लाख से अधिक खेजड़ी के पेड़ काटे जा चुके हैं और भविष्य में करीब 50 लाख खेजड़ी पेड़ों की कटाई की तैयारी बताई जा रही है। ये आंकड़े इस बात का संकेत देते हैं कि हजारों से लाखों की संख्या में खेजड़ी वृक्ष अभी भी मौजूद हैं।

राशिफल

शुभ संवत 2082, शाके 1947, सौम्य गोष्ठ, फाल्गुन कृष्ण पक्ष, शिशिर ऋतु, गुरु उदय पूर्वे, शुक्रोद्रय पश्चिमे तिथी अष्टमी, मंगलवार , विशाखा नक्षत्रे, वृण योगे, वालव करणे, वृश्चिक की चंद्रमा, रोग विमुक्ता, स्नान मुर्हूत जातकर्म,नामाकरण अन्न प्रासन मुंडन कर्णवेध, गृह प्रवेश व्यापार मुर्हूत तथापि उत्तर दिशा की यात्रा शुभ उत्तम होगी।

आज जन्म लिए बालक का फल.....

आज जन्म लिया बालक योग्य, बुद्धिमानी, चपल, चतुर, चंचल, उत्तम वृत्ति वाला, धनी-मानी, कुशल वक्ता-अधिवक्ता, शासक-प्रशासक, बैंक कर्मचारी, लिपिक, कैशियर, एमसीए तथा बीसीए करने वाला, वक्ता-अधिवक्ता होगा।

मेष राशि :- मनोबल उत्साहवर्धक होगा, कार्यगति में सुधार, शुभ समाचार अवश्य ही मिलेगा।

वृष राशि :- कुछ बाधायें कष्टप्रद रखें, स्त्री शरीर कष्ट, कारोबारी बाधा, धैर्य पूर्वक कार्य करें।

मिथुन राशि :- कार्य कुशलता से संतोष, परिश्रम सफल होगा, स्त्री वर्ग से सुख अवश्य होगा।

कर्क राशि :- कुटुम्ब की समस्यायें सुलझेंगी तथा सुख-शांति में समय बीतेगा, समय का ध्यान रखें।

सिंह राशि :- परिश्रम से समय पर कार्य पूर्ण होंगे, व्यवसायिक क्षमता अवश्य ही बढ़ेगी।

कन्या राशि :- स्त्री वर्ग से हर्ष-उल्लास, आशानुकूल सफलता का हर्ष, बिगड़े कार्य बनाने का प्रयास अवश्य करें।

तुला राशि :- योजनायें पूर्ण होंगी, सफलतापूवर्क कार्य पूर्ण कर लेंगे, रुके कार्य पर ध्यान अवश्य दें।

वृश्चिक राशि :- कार्यगति उत्तम, चिन्ता कम होगी, प्रभुत्व एवं प्रतिष्ठा अवश्य ही बढ़ेगी।

धनु राशि :- आशानुकूल सफलता का हर्ष, कार्यगति उत्तम होगी, भावनायें संवदेनशील होंगी।

मकर राशि :- अधिकारी वर्ग के तनाव से क्लेश व अशांति, रुके कार्य बन ही जायेंगे ध्यान दें।

कुंभ राशि :- मनोबल बनाये रखें किन्तु हाथ में कुछ न लगे तथा नया कार्य अवश्य ही होगा।

मीन राशि :- दैनिक कार्यगति उत्तम होगी, कुटुम्ब में सुख, समय उत्तम बनेगा ध्यान अवश्य दें।

जब पत्नी ने एक्टर को घर से निकाला, बोली- बाहर जाओ, पैसे कमाओ

फिल्म धुरंधर में सान्याल का किरदार निभाने वाले माधवन ने सुनाया किस्सा

अभिनेता आर माधवन आजकल हर दूसरी-तीसरी फिल्म में नजर आ रहे हैं। उनकी पिछले छह महीनों में करीब तीन फिल्में रिलीज हुई, जिसमें से एक फिल्म धुरंधर है, जो अभी भी बॉक्स ऑफिस और ओटीटी दोनों पर धमाल मचा रही है। इसमें उन्होंने अजय सान्याल का रोल निभाया है, जो भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के किरदार से प्रेरित था। फिल्म धुरंधर में माधवन का रोल काफी कम था, लेकिन इसके पार्ट-2 में उनका रोल बड़ा और अहम होने वाला है।

बता दें माधवन इस समय हिंदी और साउथ दोनों फिल्म इंडस्ट्री में एक्टिवली काम कर रहे हैं। हालांकि एक वक्त ऐसा भी था जब वो चार साल तक एक्टिंग से दूर रहे। कोविड-19 से पहले माधवन काम से दूर थे, लेकिन इसी दौरान वह अपने अगले फेज की तैयारी में भी जुटे थे। हाल ही में उन्होंने उस दौर को याद किया, जब वह काम नहीं कर रहे थे। उन्होंने बताया कि कैसे उनकी पत्नी सरिता ने उन्हें काम करने के लिए प्रेरित किया।

रिपोर्ट के मुताबिक माधवन ने एक मजेदार किस्सा सुनाते हुए बताया कि मेरी बीवी कहती है कि आप कभी काम से बाहर नहीं निकल सकते। आप तो तमिल कॉमेडी करते हैं, तमिल एक्शन करते हैं। ओटीटी करते हैं, हिंदी एक्शन करते हैं, इंग्लिश ओटीटी करते हैं। मुझे तो हैरानी हो रही है कि आप घर पर बैठे हैं। कोरोना के समय 2020 में उन्होंने मुझे घर से बाहर निकाल दिया और बोलीं कि जाओ बाहर, कुछ काम करो, पैसे कमाओ। माधवन ने बताया कि कैसे उनकी पत्नी ने उनमें काम के प्रति आ रहे बदलाव पर ध्यान दिलाया। माधवन ने कहा कि एक दिन मेरी पत्नी ने मुझसे पूछा कि आपको क्या हो गया है? आप काम पर ऐसे जा रहे हो जैसे जल्दी से वापस आना चाहते हो।

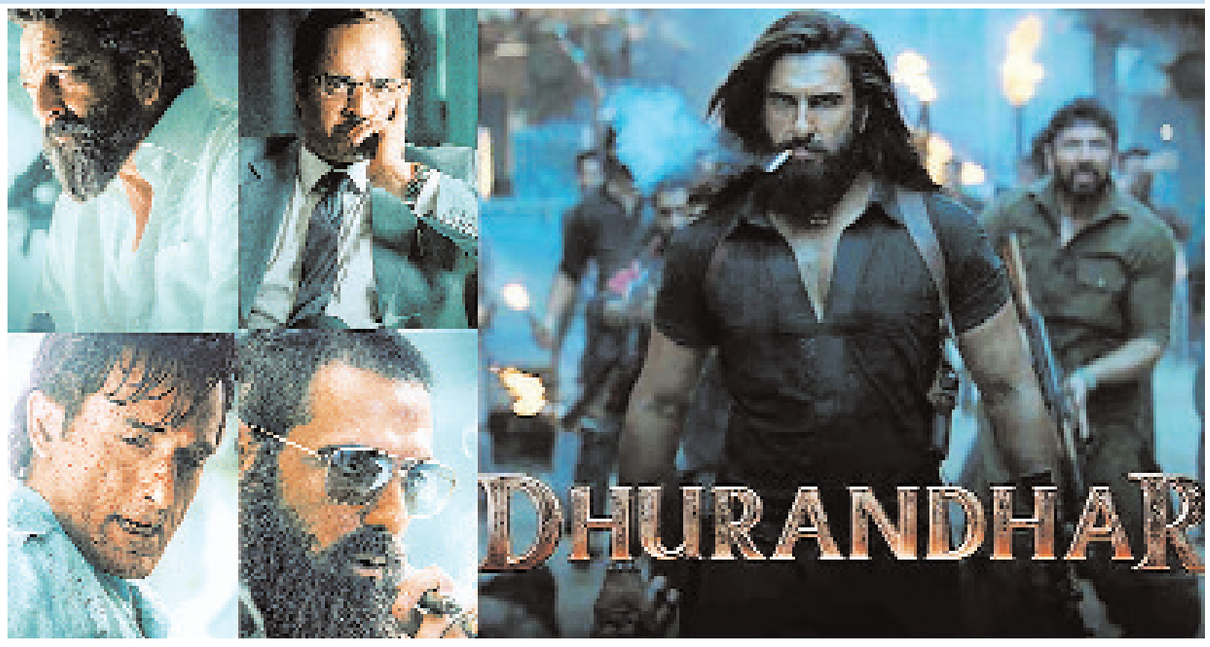

अरिजीत सिंह के निर्णय को सम्मान देना चाहिए : लकी

बॉलीवुड सिंगर अरिजीत सिंह के प्लेबैक सिंगिंग से रिटायरमेंट की घोषणा को लेकर श्रेया घोषाल, चिन्मयी और शिल्पा राव के बाद अब मशहूर सिंगर-कंपोजर लकी अली ने भी अपनी बात रखी है। उन्होंने अरिजीत के फैसले को एक बेहद व्यक्तिगत और गहराई से जुड़ा कदम बताया और कहा कि इसे जज नहीं, सम्मान देना चाहिए।

लकी अली ने एक इंटरव्यू में कहा कि किसी कलाकार का ऐसा निर्णय हमेशा किसी गहरे भावनात्मक अनुभव या टूटन से उपजता है। उन्होंने कहा, 'यह समझने के लिए कि एक म्यूजिशियन क्या महसूस कर रहा है, आपको उसकी जगह खुद को रखना होगा। अगर अरिजीत ने यह कदम उठाया है, तो निश्चित ही उसके भीतर कुछ टूटा होगा। जब मैंने उनका स्टैंड देखा, तो मैं उससे पूरी तरह सहमत था। यह कोई नुकसान नहीं है। वह गाना जारी रखेंगे, लेकिन पहले जैसी परिस्थितियों में नहीं।' लकी अली ने संगीत करियर की वास्तविकताओं पर भी बात की।

उन्होंने कहा कि म्यूजिक इंडस्ट्री में कोई चीज आसानी से नहीं मिलती। 'आपको कुछ भी थाली में परोसकर नहीं दिया जाता। आपको अपना काम ईमानदारी से, पूरी क्षमता के साथ करना होता है। जब आप अपनी राह खुद बनाना सीख जाते हैं, तो आगे बढ़ने का आत्मविश्वास बढ़ता है, लेकिन सफर कभी आसान नहीं होता।' इस दौरान उन्होंने अरिजीत की घोषणा का संदर्भ भी दोहराया। अरिजीत सिंह ने कुछ दिन पहले अपने इंस्टाग्राम पोस्ट में लिखा था कि वे अब प्लेबैक सिंगर के तौर पर कोई नया असाइनमेंट नहीं लेंगे। उन्होंने इसे एक शानदार सफर बताते हुए श्रोताओं का आभार व्यक्त किया था। यह खबर सामने आते ही उनके प्रशंसकों में निराशा और भावुक प्रतिक्रिया देखने को मिली। लकी अली के बारे में बात करें तो वे भारतीय पॉप और सूफी संगीत की दुनिया के एक प्रतिष्ठित नाम हैं। कॉमेडी के दिग्गज महमूद के बेटे लकी अली ने 90 के दशक में 'ओ सनम' जैसे सदाबहार गाने देकर इंडी-पॉप को नए मुकाम पर पहुंचाया। 'सफरनामा', 'एक पल का जीना', 'ना तुम जानो ना हम' और 'कभी ऐसा लगता है' जैसे गानों से उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई। सिंगिंग के साथ-साथ वे अभिनय में भी हाथ आजमा चुके हैं।

संदीपा की भाव-भंगिमाएं संकेत देती हैं कि उनका किरदार कहानी में भावनात्मक गहराई रखता है

कुछ ही पलों में संदीपा की भाव-भंगिमाएं यह संकेत देती हैं कि उनका किरदार कहानी में भावनात्मक गहराई रखता है, जो धीरे-धीरे सामने आएगा। संजय लीला भंसाली जैसे प्रतिष्ठित फिल्ममेकर के प्रोडक्शन का हिस्सा बनना संदीपा धर के करियर का एक अहम पड़ाव है। हालांकि अपने अब तक के सफ़र में वह ऐसे किरदार चुनती रही हैं, जो उन्हें एक कलाकार के रूप में आगे बढ़ने का मौका देते हैं।

इसी कड़ी में दो दीवाने सहर में से उनका जुड़ाव कंटेंट-ड्रिवन और लेयर्ड सिनेमा की ओर उनके सोच-समझकर किए गए कदम को दर्शाता है। हालांकि उनके किरदार से जुड़ी जानकारी फिलहाल गोपनीय रखी गई है, लेकिन ट्रेलर यह जरूर संकेत देता है कि इस फिल्म में संदीपा को एक फ्रेश, कॉन्फिडेंट और खूबसूरत अंदाज़ में देखा जाएगा। उनकी सधी हुई मौजूदगी यह भरोसा दिलाती है कि पर्दे पर उनका असर धीरे-धीरे खुलकर सामने आएगा।

अहान संगीत से करते हैं शूटिंग से पहले की घबराहट पर काबू

महत्वपूर्ण दृश्यों की शूटिंग से पहले अपनी नर्वसनेस पर काबू पाने को लेकर बॉलीवुड के नवोदित एक्टर अहान शेट्टी ने बताया कि उनके लिए सबसे बड़ा सहारा म्यूजिक है, जो उन्हें मानसिक रूप से तैयार होने में मदद करता है। एक्टर ने बताया कि किसी भी सीन से पहले वे नॉइज कैंसिलिंग हेडफोन लगाकर अपनी वैन या अकेले टेंट में बैठ जाते हैं और संगीत सुनते हैं। उन्होंने कहा कि वे हर सीन के मूड के अनुसार अलग-अलग जॉनर का म्यूजिक चुनते हैं ताकि वह उस भाव से पूरी तरह जुड़ सकें। म्यूजिक की यह प्रक्रिया उन्हें बाहरी हलचल और प्रेशर से अलग कर देती है और वे पूरी तरह सीन पर फोकस कर पाते हैं।

अहान के अनुसार, घबराहट पूरी तरह खत्म तो नहीं होती, लेकिन संगीत के जरिए वह उसे मैनेज कर लेते हैं। 'बॉर्डर 2' में अहान ने एक नेवी ऑफिसर की भूमिका निभाई है, जिसके लिए उन्हें पानी के अंदर फिल्माए गए कई दृश्यों की तैयारी करनी पड़ी। उन्होंने बताया कि कोविड काल के दौरान 2020 में उन्होंने पैडी (पीएडीआई) लाइसेंस हासिल

किया था, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर का स्कूबा डाइविंग सर्टिफिकेशन है। इसके लिए थ्योरी, पूल ट्रेनिंग और ओपन-वॉटर डाइव जैसी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। अहान ने बताया कि बचपन में वे स्कूल की स्विमिंग टीम का हिस्सा थे, जिससे पानी में रहना उनके लिए काफी आरामदायक रहा। जब डायरेक्टर अनुराग सिंह ने कहानी के साथ पानी के सीक्वेंस बताए, तो वे और भी उत्साहित हो गए। टीम ने शूटिंग से दो महीने पहले ट्रेनिंग शुरू कर दी थी। अहान ने बताया कि जहां कई लोगों को पानी में घबराहट होती थी, वहीं उन्हें कोई दिक्कत नहीं हुई। सेट पर मौजूद डाइव और सेफ्टी टीम ने भी उन्हें पूरा सपोर्ट दिया। उनके अनुसार, स्क्रीन पर पानी के नीचे के दृश्य बेहद प्रभावी दिख रहे हैं और हर सीन को लेकर वे उत्साहित रहे। 'बॉर्डर 2' 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध की बसंतर की लड़ाई पर आधारित है, जो एक निर्णायक जंग थी। भारतीय सैनिकों ने इस युद्ध में असाधारण बहादुरी दिखाते हुए पंजाब-जम्मू सेक्टर की रक्षा की थी।

'दुश्मन देवता' में लगातार डांस करते हुए पैरों पड़ गए थे छाले : सोनम खान

हाल ही में बॉलीवुड अभिनेत्री सोनम खान ने 1991 में रिलीज हुई फिल्म 'दुश्मन देवता' के लोकप्रिय गीत 'उरी उरी बाबा' से जुड़ा एक थोड़ा दर्द भरा अनुभव साझा किया है। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर इस गाने का वीडियो पोस्ट करते हुए बताया कि शूटिंग के दौरान गर्म मौसम और कठिन परिस्थितियों ने उन्हें कैसी परेशानी दी थी। सोनम ने बताया कि गाने की शूटिंग बेहद गर्मी के बीच हुई थी और उन्हें पूरे सीक्वेंस में नंगे पैर डांस करना पड़ा। लगातार गर्म सतह पर डांस करने की वजह से उनके पैरों में दर्दनाक छाले पड़ गए थे, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने शूटिंग पूरी की। उन्होंने पोस्ट में मजाकिया अंदाज में लिखा, 'हां, ये मैं ही हूं... उरी उरी बाबा। इस गाने की शूटिंग के दौरान बहुत गर्मी थी। मुझे नंगे पैर डांस करना पड़ा और पैरों में छाले पड़ गए थे।' उनके इस खुलासे को

देखकर फैंस ने कमेंट सेक्शन में प्यार और प्रशंसा की बरसात कर दी। 'दुश्मन देवता' के इस गाने को ऊषा उथुप ने अपनी दमदार आवाज दी थी, जबकि इसके बोल अंजान ने लिखे थे और संगीत बप्पी लहरी ने तैयार किया था। फिल्म का निर्देशन अनिल गांगुली ने किया था जिसमें धर्मेंद्र, डिंपल कपाड़िया, आदित्य पंचोली और सोनम प्रमुख भूमिकाओं में थे। कहानी एक ऐसे गांव के इर्द-गिर्द घूमती है जो डाकुओं और जंगली जानवरों के आतंक से परेशान है। इसी गांव में धर्मेंद्र द्वारा निभाया गया किरदार एक रहस्यमयी उद्देश्य के साथ पहुंचता है और गांव वाले उसे देवता समान मानने लगते हैं। हालांकि कहानी और कलाकारों के बावजूद 'दुश्मन देवता' बॉक्स ऑफिस पर खास प्रदर्शन नहीं कर पाई और फिल्म के निर्माता को भारी नुकसान झेलना पड़ा।

'फैमिली बिजनेस' मेरे लिए कई मायनों में यादगार : विजय वर्मा

वेब सीरीज 'फैमिली बिजनेस' को लेकर नेटफ्लिक्स के विशेष कार्यक्रम में अभिनेता विजय वर्मा ने कहा कि यह प्रोजेक्ट उनके लिए कई मायनों में यादगार है। उन्होंने पहली बार अपने पसंदीदा निर्देशक हंसल मेहता के साथ काम किया है, जिसे वह अपने करियर का खास अनुभव मानते हैं। इस कार्यक्रम में वेब सीरीज 'फैमिली बिजनेस' की पूरी स्टार कास्ट ने हिस्सा लिया, जहां कलाकारों ने अपने अनुभव साझा किए और टीमवर्क की सराहना की। इस दौरान अभिनेता विजय वर्मा और अनिल कपूर सबसे ज्यादा चर्चा में रहे, जिन्होंने न सिर्फ प्रोजेक्ट के प्रति अपना उत्साह व्यक्त किया, बल्कि सह-कलाकारों की प्रशंसा भी

की। एक्टर विजय ने कहा, 'हंसल सर ने कमाल का काम किया है। उनका काम करने का तरीका बिल्कुल मॉडर्न है। इस सीरीज में मेरा किरदार बेहद खास है। पहली बार मैंने विक्रम के साथ स्क्रीन शेयर की और अनिल तो हमेशा की तरह एवरग्रीन हैं। सबसे उदार, सबसे डैशिंग और सबसे कम उम्र के एक्टर जिनके साथ मैंने काम किया। उनकी एनर्जी देखकर मजा आ जाता है।' उन्होंने आगे कहा कि रिया और नंदीश के साथ काम करना भी शानदार अनुभव रहा। 'इस प्रोजेक्ट में कई चीजें मेरे लिए 'पहली बार' हुईं, जो इसे और खास बनाती हैं,' विजय ने हंसते हुए कहा। दूसरी तरफ, अनिल कपूर ने भी मंच पर अपनी खुशी और उत्साह व्यक्त किया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए उन्होंने शो की होस्ट जैमी लिवर की बेहद तारीफ की और कहा, 'जैमी, मैं आपका बहुत बड़ा फैन हूं। याद है, मैंने आपको सबसे पहले कॉल किया था जब आपने अपना करियर शुरू भी नहीं किया था।' जैमी की प्रतिभा की अनिल ने खुले दिल से सराहना की। इसके बाद अनिल कपूर ने पूरी टीम की प्रशंसा की।

इंडस्ट्री धर्म को लेकर कभी भेदभाव नहीं करती : जोया अफरोज

हाल ही में अभिनेत्री जोया आफरोज ने फिल्म गांधी टॉक्स की स्क्रीनिंग में शिरकत की थी। इस साइलेंट फिल्म का संगीत मशहूर संगीतकार ए. आर. रहमान ने दिया है। स्क्रीनिंग के दौरान अभिनेत्री ने मीडिया से बातचीत की। उन्होंने कहा कि बॉलीवुड इंडस्ट्री धर्म को लेकर कभी भेदभाव नहीं करती है।

इस बातचीत में उन्होंने ए. आर. रहमान के कम्युनल वाले बयान को सिरे से नकारते हुए कहा कि उनके धर्म के होने के बावजूद अभिनेत्री को फिल्म इंडस्ट्री में अब तक धर्म के आधार पर किसी भी तरह का भेदभाव झेलना नहीं पड़ा। जोया ने कहा, मेरा पर्सनल अनुभव अब तक ऐसा नहीं रहा है, और मुझे उम्मीद है कि आगे भी ऐसा नहीं होगा। हमारे देश में हम एकता और विविधता का जश्न मनाते हैं। मुझे लगता है कि हमें यही भावना हमेशा बनाए रखनी चाहिए। जोया ने आगे फिल्मों की सामाजिक जिम्मेदारी पर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा, फिल्में समाज का आईना होती

हैं; वे जिंदगी को वैसा ही दिखाती हैं, जैसा है। अगर कोई फिल्म बच्चों के लिए नहीं है, तो उन्हें नहीं दिखानी चाहिए। इसीलिए सर्टिफिकेशन सिस्टम है। मुझे लगता है कि इसे ऐसे ही रखना चाहिए। गांधी टॉक्स की बात करें तो यह फिल्म गांधी जी की तस्वीर को नोटों पर देखने और उनके आदर्शों के बीच के फर्क की कहानी को दिखाती है। इसकी कहानी एक ऐसे युवा व्यक्ति के ईर्द-गिर्द घूमती है, जो पैसों के लिए संघर्ष करता है। उसकी जिंदगी में एक चोर की एंट्री होती है और यहीं से कहानी एक नया मोड़ लेती है। फिल्म व्यंग्य के जरिए समाज और मूल्यों पर सवाल उठाती है। किशोर बेलेकर द्वारा निर्देशित फिल्म में अदिति राव हैदरी, विजय सेतुपति, अरविंद स्वामी और सिद्धार्थ जाधव जैसे अनुभवी कलाकार अहम भूमिकाओं में हैं। बता दें कि अभिनेत्री जोया आफरोज इन दिनों वेब सीरीज तस्करी को लेकर जमकर सुर्खियां बटोर रही हैं।

इजराइली राष्ट्रपति सिडनी पहुंचे, लोग कर रहे विरोध

सिडनी। इजराइल के राष्ट्रपति इसाक हर्ज़ोग सोमवार को सिडनी पहुंचे। उनका चार दिन का ऑस्ट्रेलिया दौरा पिछले साल दिसंबर में बॉन्डी बीच पर हुए आतंकी हमले के बाद यहूदी समुदाय के प्रति समर्थन दिखाने के लिए है। हालांकि फिलिस्तीनियों को लेकर इजराइल को लेकर विवाद भी हो रहा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एक बयान में हर्जोग ने कहा कि वह पूरे ऑस्ट्रेलिया में यहूदी समुदायों का दौरा करेंगे ताकि हमले के बाद समुदाय के प्रति एकजुटता व्यक्त कर सकें और उन्हें ताकत दे सकें। रिपोर्ट के मुताबिक ऑस्ट्रेलिया के गवर्नर-जनरल और पीएम के निमंत्रण पर आए हर्ज़ोग अपने दौरे में यहूदी समुदाय के नेताओं के साथ कार्यक्रमों में शामिल होंगे। इसके अलावा, उनकी वरिष्ठ राजनेताओं से भी मुलाकात हो सकती है। दूसरी ओर फिलिस्तीनियों को लेकर इजराइल की नीतियों और कार्रवाइयों के विरोध में ऑस्ट्रेलिया में समूहों और आम लोगों ने इस यात्रा का विरोध कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलियाई यहूदियों और लोगों ने एक खुला पत्र लिखकर कहा है कि हर्ज़ोग यहां स्वागत योग्य नहीं हैं। हर्ज़ोग की जिन शहरों में यात्रा तय है, वहां विरोध प्रदर्शन किए जाने की योजना है। इनमें कैनबरा और मेलबर्न भी शामिल हैं। सिडनी में सोमवार शाम शहर के केंद्र में रैली और मार्च निकाले जाने की तैयारी है। इस दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। न्यू साउथ वेल्स राज्य में हर्ज़ोग की यात्रा के समय 3,000 से ज्यादा पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे, जिनमें से करीब 500 पुलिसकर्मी केवल प्रस्तावित प्रदर्शन की सुरक्षा में लगाए जाएंगे। बता दें पिछले साल 14 दिसंबर को सिडनी के बॉन्डी बीच पर यहूदी त्योहार के जश्न में गोलीबारी हुई थी।

सीरिया में बढ़ा सऊदी अरब का दबदबा, अरबों डॉलर के निवेश समझौतों से ईरान की बढ़ी चिंता

दमिश्क

सीरिया के भू-राजनीतिक परिदृश्य में एक बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। जिस देश में कभी शिया बहुल ईरान का निर्विवाद प्रभाव और सैन्य दबदबा हुआ करता था, वहां अब सऊदी अरब तेजी से अपनी आर्थिक और रणनीतिक पैठ बना रहा है। दिसंबर 2024 में बशर अल-असद के सत्ता से हटने के बाद बनी नई व्यवस्था के तहत सीरिया और सऊदी अरब के बीच ऐतिहासिक समझौतों पर हस्ताक्षर हुए हैं। शनिवार को हुए इन करारों में संयुक्त एयरलाइन की स्थापना और करीब 1 अरब डॉलर की टेलीकम्युनिकेशन परियोजना जैसे बड़े निवेश शामिल हैं, जो इस क्षेत्र में नए शक्ति संतुलन का संकेत दे रहे हैं।

सीरियाई निवेश प्राधिकरण के अनुसार, इन समझौतों का सबसे प्रमुख हिस्सा एक कम लागत वाली संयुक्त सीरिया-सऊदी एयरलाइन की शुरुआत करना है। इसका मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के माध्यम से सीरिया के वैश्विक संपर्क को फिर से बहाल करना है। इसके साथ ही, रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण उत्तरी शहर अलेप्पो में एक नए अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के निर्माण और पुराने हवाई अड्डे के आधुनिकीकरण पर भी सहमति बनी है। डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए सिल्कलिंक नामक परियोजना शुरू की जा रही है, जिसके तहत 1 अरब डॉलर के निवेश से सीरिया के दूरसंचार ढांचे और कनेक्टिविटी में सुधार किया जाएगा। दशकों तक असद शासन और उस पर लगे अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के कारण सीरिया वैश्विक निवेश से कटा हुआ था। हालांकि, पिछले साल अमेरिका द्वारा अधिकांश प्रतिबंधों को हटाए जाने के बाद विदेशी पूंजी के लिए दरवाजे खुल गए हैं। सीरिया की नई सरकार का झुकाव स्पष्ट रूप से अमेरिका और पश्चिमी देशों की ओर दिखाई दे रहा है, जो इजरायल और खाड़ी देशों के हितों के अनुकूल माना जा रहा है। यही वजह है कि सऊदी अरब इस नई व्यवस्था को न केवल राजनीतिक समर्थन दे रहा है, बल्कि निवेश के जरिए अपनी मौजूदगी को निर्णायक बना रहा है। शनिवार को दोनों देशों के बीच समुद्री जल को पीने योग्य बनाने (डीसैलिनेशन) और विकास सहयोग से जुड़े कई अन्य समझौतों पर भी मुहर लगी।

सऊदी अरब के निवेश मंत्री खालिद अल-फालिह ने इस साझेदारी को रणनीतिक करार देते हुए घोषणा की कि सीरिया में बड़ी परियोजनाओं के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी के साथ एक विशेष निवेश फंड शुरू किया जाएगा। सीरिया, जो लंबे गृहयुद्ध के बाद अपने जर्जर ढांचे और चरमराई अर्थव्यवस्था को फिर से खड़ा करने की चुनौती से जूझ रहा है, के लिए यह निवेश किसी संजीवनी से कम नहीं है। हाल के आंकड़ों पर गौर करें तो पिछले साल जुलाई में सऊदी अरब ने 6.4 अरब डॉलर के निवेश समझौते किए थे, जबकि उसके बाद के महीनों में सीरिया ने 14 अरब डॉलर से अधिक के नए करार हासिल किए हैं। युद्ध के बाद पुनर्निर्माण की इस दौड़ में सीरिया केवल खाड़ी देशों तक सीमित नहीं है। इसी सप्ताह सीरिया ने अमेरिकी ऊर्जा कंपनी शेवरॉन और कतर की पावर इंटरनेशनल के साथ समुद्र में तेल और गैस की खोज के लिए शुरुआती समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

खिताबी मुकाबले में फूले फाइटर्स ने किया ट्रॉफी पर कब्जा

भोपाल

डिजिटल कुशवाहा के तत्वावधान में आयोजित कुशवाहा क्रिकेट लीग सीजन-2 का दो दिवसीय आयोजन उड़ान क्रिकेट अकादमी, भोपाल में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस क्रिकेट प्रतियोगिता में समाज के युवाओं ने खेल भावना, अनुशासन और प्रतिस्पर्धात्मक क्रिकेट का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

फाइनल मैच फूले फाइटर्स और अशोका वॉरियर्स के बीच खेला गया, जिसमें फूले फाइटर्स ने जीत दर्ज कर कुशवाहा क्रिकेट लीग सीजन-2 की ट्रॉफी अपने नाम की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जी.पी. माली (पूर्व एडीएम) एवं पार्षद उर्मिला मौर्य ने महापुरुषों के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। डिजिटल कुशवाहा के संस्थापक एवं अध्यक्ष विक्रम सिंह कुशवाहा ने कहा कि युवाओं को खेल गतिविधियों के माध्यम से सकारात्मक दिशा देने के लिए संगठन सदैव तत्पर है। क्रिकेट, हॉकी सहित अन्य खेलों से युवाओं के अंदर नेतृत्व कौशल विकसित होता है। संगठन की ओर से भविष्य में भी इस तरह की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। प्रतियोगिता में फूले फाइटर्स, अशोका वॉरियर्स, बुद्धा ब्रिगेड्स और कुश चैंपियंस सहित चार टीमों ने भाग लिया। पहले दिन खेले गए मुकाबलों में फूले फाइटर्स और अशोका वॉरियर्स ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत दर्ज की। वहीं, अंतिम खिताबी मुकाबलों में खिलाड़ियों ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया। इस दौरान वरिष्ठ पत्रकार एवं मीडिया प्रशिक्षक हितेश कुशवाहा ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उन्हें शुभकामनाएं दीं।

शक्तिशाली चुंबकीय ऊर्जा का केंद्र है अल्मोड़ा में मां कसार देवी मंदिर

नई दिल्ली

विज्ञान और अध्यात्म के बीच हमेशा जंग देखने को मिलती है। जहां विज्ञान तथ्यों पर चलता है, वहीं अध्यात्म दृढ़ विश्वास और आत्म-अवलोकन से जुड़ा है, लेकिन भारत में कई चमत्कार और रहस्यों से भरी ऐसी जगह हैं, जहां विज्ञान भी अध्यात्म के आगे घुटने टेक देता है। हम बात कर रहे हैं उत्तराखंड के अल्मोड़ा में स्थित मां भवानी के शक्तिशाली मंदिर कसार देवी की, जहां शक्तिशाली चुंबकीय ऊर्जा का अनुभव होता है। अल्मोड़ा से लगभग 8-9 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ पर बना मां भगवती का कसार देवी मंदिर विश्व प्रसिद्ध है। मंदिर पहाड़ की चोटी पर बना है, जहां से प्रकृति का अद्भुत नजारा देखने को मिलता है। मां भगवती का मंदिर बहुत छोटा है, जहां गर्भगृह में मां अस्त्र और शस्त्र के साथ सिंह पर सवार है। मंदिर के बाहर भी रक्षक के तौर पर कई सिंहों की प्रतिमा बनी हैं। मंदिर सिर्फ अध्यात्म की दृष्टि से ही

प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी बाकी मंदिरों से काफी अलग है। नासा ने खुद माना है कि मंदिर जहां स्थित है, वहां शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्र है और यही कारण है कि वहां दर्शन करने जाने वाले भक्तों को असीम शांति प्राप्त होती है।

हर बार खाली हाथ लौटा नासा

मंदिर के बारे में माना जाता है कि यहां देवी मां साक्षात अवतार में आई थीं। यह भारत की एक एकलौती ऐसी जगह है, जहां चुंबकीय शक्तियां मौजूद हैं। मंदिर के आसपास कई जगह हैं, जहां धरती के अंदर बड़े-बड़े भू-चुंबकीय पिंड हैं, जो चुंबकीय ऊर्जा का भंडार हैं। चुंबकीय ऊर्जा का पता लगाने के लिए नासा कई बार मंदिर पर शोध करने आया लेकिन हर बार खाली हाथ ही लौटना पड़ा।

ब्राह्मणों को आबादी के अनुसार मिले आरक्षण

भोपाल। अपनी किताबों और बयानों के कारण चर्चाओं में रहने वाले मप्र संवर्ग के सेवानिवृत्त आईएएस नियाज खान ने रविवार को ब्राह्मणों के समर्थन में एक नया ट्वीट किया है। ब्राह्मण समाज की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का समर्थन करते हुए नियाज ने उन्हें आरक्षण दिए जाने के संबंध में ट्वीट किया है। नियाज खान ने एक्स पर ब्राह्मणों को सनातन धर्म का रक्षक बताते हुए लिखा-'ब्राह्मण सनातन धर्म के हजारों सालों से संरक्षक रहे हैं। इसलिए इनका सर्वांगीण विकास आवश्यक है। इन्हें आबादी अनुसार आरक्षण दिया जाना चाहिए।'खान ने तर्क दिया है कि ब्राह्मणों का सर्वांगीण विकास न केवल धर्म के लिए बल्कि राष्ट्र की मजबूती के लिए भी अनिवार्य है। उन्होंने आगे लिखा कि हर सरकारी योजना में ब्राह्मणों को आरक्षण मिलना चाहिए।

नोबेल विजेता नरगिस मोहम्मदी को सात साल की अतिरिक्त जेल

तेहरान। ईरान में मानवाधिकारों की आवाज उठाने वाली नोबेल शांति पुरस्कार विजेता नरगिस मोहम्मदी की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। जेल में बंद मोहम्मदी को अब सात साल से अधिक की अतिरिक्त जेल की सजा सुनाई गई है। यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है जब वह पहले से ही जेल में भूख हड़ताल पर हैं और ईरान सरकार देश के भीतर उठने वाली असहमति की आवाजों पर लगातार सख्ती बरत रही है। नरगिस मोहम्मदी के समर्थकों और उनके वकील मुस्तफा निली द्वारा साझा की गई जानकारी के अनुसार, मशहद की एक रिवोल्यूशनरी कोर्ट ने शनिवार को यह नया फैसला सुनाया। अदालत ने उन्हें साजिश और मिलीभगत के आरोप में छह साल और प्रोपेगेंडा फैलाने के आरोप में डेढ़ साल की सजा दी है। इस तरह उन्हें कुल साढ़े सात साल की अतिरिक्त जेल काटनी होगी। इतना ही नहीं, जेल से रिहाई के बाद उन पर दो साल का यात्रा प्रतिबंध भी लगाया गया है, जो उनकी भविष्य की गतिविधियों को सीमित करने की कोशिश माना जा रहा है। मोहम्मदी दिसंबर से ही हिरासत में हैं, जब उन्हें मशहद में एक मानवाधिकार कार्यकर्ता के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम के दौरान गिरफ्तार किया गया था। अपने साथ हो रहे व्यवहार और जेल की स्थितियों के विरोध में उन्होंने 2 फरवरी से भूख हड़ताल शुरू कर दी है।

पुतिन से मिलना चाहता था एप्सटीन लेकिन नहीं गली दाल

मॉस्को

कुख्यात यौन अपराधी जेफ्री एपस्टीन की अंतरराष्ट्रीय पहुंच और उसके संदिग्ध नेटवर्क को लेकर एक बार फिर सनसनीखेज खुलासे सामने आए हैं। अमेरिका के न्याय विभाग द्वारा जारी किए गए नए दस्तावेजों से यह संकेत मिलता है कि एपस्टीन रूस के शीर्ष नेतृत्व, विशेषकर राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव तक सीधी पहुंच बनाने की जुगत में लगा हुआ था। इन दस्तावेजों के अनुसार, एपस्टीन न्यूयॉर्क में रूस के तत्कालीन संयुक्त राष्ट्र राजदूत विटाली चुरकिन के साथ लगातार संपर्क में था। वर्ष 2017 में चुरकिन की अचानक मृत्यु के बाद, एपस्टीन ने नॉर्वे के एक राजनेता के माध्यम से रूसी विदेश मंत्री लावरोव तक पहुंचने का प्रयास किया। जून 2018 के एक ईमेल में एपस्टीन ने दावा किया था कि चुरकिन उसे बेहतर समझते थे और उन्होंने अमेरिकी राजनीति के शीर्ष संवादों को भी एपस्टीन के माध्यम से समझने की कोशिश की थी।

दस्तावेजों के विश्लेषण से पता चलता है कि 2013 से 2018 के बीच एपस्टीन ने कई बार राष्ट्रपति पुतिन से मिलने या उनसे बातचीत करने की कोशिशें कीं। उसने खुद को एक सलाहकार के रूप में पेश किया, जो रूस को पश्चिमी निवेश आकर्षित करने में मदद कर सकता था। एक ईमेल में उसने स्पष्ट रूप से लिखा कि यदि पुतिन उनसे मिलना चाहते हैं, तो उन्हें कम से कम दो से तीन घंटे का निजी समय देना होगा। हालांकि, अभी तक उपलब्ध किसी भी आधिकारिक दस्तावेज से इस बात की पुष्टि नहीं हुई है कि पुतिन और एपस्टीन के बीच वास्तव में कभी कोई व्यक्तिगत मुलाकात हुई थी या नहीं।

सामूहिक सम्मेलन

भोपाल। सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सनसनी खेज मामला : अमेरिका के आरोपों से ड्रैगन की साजिश का खुलासा

गलवान तनाव के सात दिन बाद चीन ने किया था परमाणु परीक्षण

वाशिंगटन

2020 में जब पूरी दुनिया कोविड महामारी से जूझ रही थी और दूसरी ओर गलवान घाटी में भारत और चीन के बीच तनाव अपने चरम पर पहुंच गया था। इसी दौरान तनाव की आड़ में चीन अपने नापाक मंसूबे को अंजाम देने की तैयारी में लगा हुआ था। आरोप है कि गलवां घाटी में भारतीय सैनिकों की शहादत के कुछ ही दिनों बाद चीन ने गुप्त रूप से परमाणु परीक्षण किए। ये आरोप अमेरिका ने लगाए हैं। ऐसे में देखा जाए तो यह केवल अंतरराष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन नहीं, बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा और रणनीतिक संतुलन के लिए भी गंभीर चेतावनी है। इतना ही नहीं ऐसे संवेदनशील समय में चीन की यह कथित गतिविधि उसकी मंशा और दीर्घकालिक रणनीति पर अहम सवाल भी खड़े करती है। बता दें कि अमेरिका ने बीते शुक्रवार को चीन पर यह आरोप लगाए हैं।

अमेरिका के अंडर सेक्रेटरी ऑफ स्टेट थॉमस जी डिनैनो ने कहा है कि चीन ने गुप्त रूप से परमाणु विस्फोट परीक्षण किए, ताकि दुनिया को इसकी भनक न लगे। अमेरिका का दावा है कि चीन ने ऐसे तरीके अपनाए जिससे भूकंप मापने वाली अंतरराष्ट्रीय प्रणालियां (सीस्मिक मॉनिटरिंग) भी इन परीक्षणों को ठीक से पकड़ न सकें।

चीन ने इस तकनीक का किया था इस्तेमाल

अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि चीन ने जिस तकनीक का इस्तेमाल किया, उसे 'डिकपलिंग' कहा जाता है। इस तकनीक में विस्फोट को इस तरह अंजाम दिया जाता है कि उसके झटके कम महसूस हों और अंतरराष्ट्रीय निगरानी एजेंसियों को शक न हो। अमेरिका का कहना है कि चीन सैकड़ों टन क्षमता वाले परमाणु परीक्षणों की तैयारी और उन्हें अंजाम दे चुका है। इतना ही नहीं डिनैनो ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में बताया कि चीन का यह कदम पूरी दुनिया के लिए खतरनाक है। उन्होंने कहा कि मौजूदा परमाणु समझौते आज की चुनौतियों से निपटने में नाकाम हो चुके हैं।

कब किया था चीन ने ये परीक्षण

डिनैनो के मुताबिक, 22 जून 2020 को चीन ने ऐसा ही एक परमाणु परीक्षण किया था। यह तारीख इसलिए भी अहम है क्योंकि यह परीक्षण गलवान घाटी में भारत-चीन हिंसक झड़प के ठीक एक हफ्ते बाद हुआ था। गलवान संघर्ष में भारत के 20 जवान शहीद हुए थे, जबकि खुफिया रिपोर्ट्स के अनुसार 30 से ज्यादा चीनी सैनिक भी मारे गए थे।

न्यू स्टार्ट संधि का किया जिक्र, इसके बारे में भी जानिए | इस दौरान डिनैनो ने न्यू स्टार्ट संधि का भी जिक्र किया, जो 2010 में अमेरिका और रूस के बीच हुई थी। इस संधि का मकसद परमाणु हथियारों की संख्या को सीमित करना था। लेकिन डिनैनो के मुताबिक, 2026 तक यह संधि अप्रासंगिक हो जाएगी क्योंकि चीन बहुत तेजी से अपना परमाणु जखीरा बढ़ा रहा है। रूस के पास बड़ी संख्या में ऐसे हथियार हैं जो इस संधि के दायरे में नहीं आते और चीन के एक भी परमाणु हथियार पर इस संधि का कोई नियंत्रण नहीं है।

दावा: सैकड़ों टन क्षमता वाले परमाणु परीक्षणों की तैयारी और उन्हें अंजाम दे चुका है चीन

ट्रंप भी दे चुके हैं बड़े संकेत

गौरतलब है कि इससे पहले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी ऐसे संकेत दे चुके हैं। बीते साल अक्तूबर में उन्होंने कहा था कि अगर रूस और चीन परमाणु परीक्षण करते हैं, तो अमेरिका भी उसी स्तर पर परीक्षण शुरू कर सकता है, हालांकि तब उन्होंने कोई ठोस जानकारी नहीं दी थी। डिनैनो का बयान ऐसे समय आया है जब अमेरिका न्यू स्टार्ट संधि के खत्म होने के बाद रूस और चीन के साथ तीन देशों की नई बातचीत शुरू करना चाहता है, ताकि परमाणु हथियारों पर नए सिरे से सीमाएं तय की जा सकें। हालांकि चीन ने फिलहाल ऐसी किसी भी बातचीत में शामिल होने से इनकार कर दिया है।

विंटर ओलंपिक के विरोध में प्रदर्शन हिंसक झड़पों में बदला, पुलिस ने किया लाठीचार्ज

रोम

उत्तरी इटली के मिलान शहर में विंटर ओलंपिक के विरोध में शांतिपूर्ण प्रदर्शन हिंसक झड़पों में बदल गया। ओलंपिक विलेज के पास हजारों लोगों ने पर्यावरणीय नुकसान और सामाजिक-आर्थिक प्रभावों के खिलाफ मार्च किया, लेकिन भीड़ के छंटने के बाद एक छोटे समूह ने पुलिस पर पथराव और आतिशबाजी कर दी। हालात बेकाबू होते देख पुलिस को लाठियां, वॉटर कैनन और आंसू गैस छोड़नी पड़ी। पुलिस के मुताबिक करीब 10,000 प्रदर्शनकारी सड़कों पर उतरे थे। हाथों में तख्तियां, बैनर और पोस्टर लिए लोग हाथों में हाथ डालकर गाते-नाचते नजर आए।

प्रदर्शन का मुख्य केंद्र ओलंपिक विलेज के आसपास का इलाका रहा, जहां सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। शाम होते-होते जब बड़ी शांतिपूर्ण भीड़ लौट गई, तभी कुछ उपद्रवी तत्वों ने माहौल बिगाड़ना शुरू किया। प्रदर्शनकारियों का गुस्सा खास तौर पर मिलान-कोर्तिना विंटर ओलंपिक 2026 के लिए हो रहे निर्माण कार्यों को लेकर था। उनका आरोप है कि खेलों के नाम पर पहाड़ों, जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों को भारी नुकसान पहुंचाया

जा रहा है। 'शहरों को वापस लो और पहाड़ों को आज़ाद करो' जैसे नारे लिखे बैनर लोगों के हाथों में दिखाई दिए।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कई प्रदर्शनकारियों ने कार्डबोर्ड से बने पेड़ों के मॉडल लिए हुए थे, जो कोर्तिना में नए बॉब्स्ले ट्रैक के लिए काटे गए जंगलों का प्रतीक बताए गए। स्थिति तब और तनावपूर्ण हो गई जब कुछ प्रदर्शनकारी ओलंपिक विलेज के पास पहुंच गए। पुलिस बैरिकेड्स की ओर पटाखे और धुएं के बम फेंकने लगे। सुरक्षा घेरा इतना मजबूत था कि ये वस्तुएं एथलीटों के आवास तक नहीं पहुंच सकीं। इसके बाद मार्च वाया बेनाको की ओर बढ़ा। पियाजाले कोरवेटो पहुंचते-पहुंचते पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प शुरू हो गई।

कई इलाकों में अफरा-तफरी का माहौल हो गया और लोगों को सुरक्षित स्थानों पर भागते देखा गया। पुलिस वैन को भी निशाना बनाए जाने की खबरें है। यह प्रदर्शन उसी समय हुआ, जब अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस मिलान के दौरे पर थे। वे अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख के रूप में ओलंपिक उद्घाटन समारोह में शामिल हुए थे। शुक्रवार को सैन सिरो स्टेडियम में हुए भव्य उद्घाटन समारोह में उन्हें कुछ लोगों की हूटिंग का सामना भी करना पड़ा। प्रदर्शन के समय उनकी मौजूदगी ने सुरक्षा एजेंसियों की चिंता और बढ़ा दी।

बिना विज्ञापन, नेस्ले सेरेलैक बेबी फूड का एकाधिकार !

ब्रांड की ताकत

नेस्ले इंडिया स्विटजरलैंड की कंपनी नेस्ले की सहायक कंपनी है । दुग्ध उत्पाद में यह विश्व की सबसे बड़ी कंपनी मानी जाती है । दो साल से कम उम्र के बच्चों के खाद्य पदार्थ के लिए किसी भी तरह का विज्ञापन नहीं किया जा सकता है । यही नहीं डॉक्टरों को फ्री अथवा रियायती दर पर इस तरह की सामग्री नहीं दी जा सकती है । इसके बाद भी इस कंपनी का बेबी फूड उत्पाद सेरेलैक भारत में एकाधिकार रखता है । बिना किसी विज्ञापन के ऐसा कैसे संभव हो सकता है । यह प्रबंधन के विद्यार्थियों के लिए शोध का विषय है । इसके पीछे एक दिलचस्प वजह है । यह है – विज्ञापन पर पाबंदी । एक ब्रांड को बनाने में विज्ञापन पर पाबंदी कैसे मददगार बन गई । आज की ब्रांड स्टोरी इसी कहानी पर आधारित है ।

मुंबई

साल 1867, जर्मनी में जन्मे फार्मासिस्ट हेनरी नेस्ले ने स्विट्जरलैंड में एक असाधारण काम किया। समय से पहले जन्मे शिशु, जो अपनी माँ का दूध पचा नहीं पा रहे थे । ऐसे में मृत्यु के कगार पर थे । हेनरी ने इसका समाधान ढूंढने की कोशिश की ।

उन्होंने गाय के दूध, गेहूं के आटे और चीनी से बना एक वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया आहार, जिसे फारिन लैक्टे के नाम से जाना जाता है (दूध के साथ आटा) यह सिर्फ दूध पाउडर नहीं था। फैरिन लैक्टे दुनिया का पहला शिशु अनाज था, जिसे आसानी से पचने योग्य, पौष्टिक और लंबे समय तक खराब न होने वाला बनाया गया था। यह उस समय की बात है जब शिशु मृत्यु दर बहुत अधिक थी और स्तनपान के विकल्प भरोसेमंद नहीं थे। एक सदी से भी अधिक समय बाद, इस उत्पाद ने भारत में बाज़ार में सबसे अप्रत्याशित परिणाम दिए हैं। नेस्ले इंडिया, जिसकी मौजूदा कीमत 25 लाख करोड़ रुपये से अधिक है, मैगी, किटकैट और नेस्कैफे जैसे ब्रांडों के साथ घर-घर में जाना-पहचाना नाम है। फिर भी, कंपनी का सबसे मजबूत ढांचागत व्यवसाय सबसे कम दिखाई देता है। वही व्यवसाय जिससे इसकी शुरुआत हुई थी- शिशु पोषण, या सरल शब्दों में कहें तो, बेबी फ़ूड। बेबी फूड को लेकर एक अजीब बात है। उत्पाद का विज्ञापन नहीं किया जा सकता है। प्रचार करना गैरकानूनी है। नियामक और जन स्वास्थ्य समूह हर गतिविधि पर कड़ी नज़र रखते हैं।इसके बावजूद, नेस्ले के ब्रांड, जैसे शिशु अनाज सेरेलैक और फॉर्मूला एनएएन, अपना दबदबा बनाए हुए हैं। भारत में सेरेलैक का लगभग 97 प्रतिशत बाज़ार पर एकाधिकार है। यही बात इसे अजीब बनाती है । बिना किसी विज्ञापन के एक कंपनी कैसे एक प्रोडक्ट की एकाधिकारी जैसी स्थिति बना सकती है। जब आपको अपने उत्पाद का विपणन करने की अनुमति ही न हो, तो आप एकाधिकार कैसे स्थापित कर सकते हैं?

नेस्ले का आगमनः भारत में नेस्ले की कहानी स्वतंत्र भारत के जन्म से बहुत पहले शुरू हुई थी।1912 में, कंपनी ने नेस्ले एंग्लो-स्विस कंडेंस्ड मिल्क कंपनी के रूप में भारत में कदम रखा। उस समय भारत में कोल्ड चेन की सुविधा नहीं थी । दूध की गुणवत्ता भरोसेमंद नहीं थी । ब्रांडेड डेयरी उत्पादों का प्रचलन भी सीमित था।उस समय नेस्ले का मिल्कमेड (कंडेंस्ड मिल्क) उन प्रमुख कंपनियों में से एक था, जिन्होंने ग्लैक्सो (जीएसके) और काउ एंड गेट (अब डैनोन) जैसी अन्य कंपनियों के साथ मिलकर इस कमी को पूरा किया।जल्द ही, नेस्ले ने विज्ञान-आधारित डेयरी उत्पादों के लिए एक विश्वसनीय नाम के रूप में अपनी पहचान बना ली।इसलिए, जब भारत को 1947 में स्वतंत्रता मिली, तब तक नेस्ले एक जाना-पहचाना नाम बन चुका था।1959 में, सरकार द्वारा घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के प्रयासों के बाद, नेस्ले को पंजाब के मोगा में एक कारखाना स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया गया। नेस्ले ने सिर्फ एक कारखाना ही नहीं स्थापित किया, बल्कि एक आपूर्ति श्रृंखला भी बनाई।उनके परिचालन की शुरुआत लगभग 4,600 किसानों से एकत्रित किए गए मात्र 500 किलोग्राम दूध से हुई थी। आज, वही प्रणाली 1 लाख से अधिक किसानों से प्रतिदिन 13 लाख किलोग्राम से अधिक दूध की आपूर्ति करती है। इसके अतिरिक्त, नेस्ले ने किसानों को कृषि स्तर पर भी लाभ प्रदान किए। इसने पशु चिकित्सा देखभाल, पशु आहार में सुधार और ब्याज मुक्त ऋण देकर किसानों को प्रोत्साहित किया। इससे उच्च गुणवत्ता वाले दूध की एक विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित हुई। शिशु पोषण के लिए स्थिरता और सुरक्षा अत्यावश्यक हैं, यह बहुत महत्वपूर्ण था। उस समय प्रमुख घरेलू प्रतिस्पर्धी अमूल की संरचना अलग थी। नेस्ले के विपरीत, यह नई कंपनी थी और इसका सहकारी मॉडल था, जिसका उद्देश्य किसानों की आय को अधिकतम करना और भारतीय रसोई में किफायती मक्खन और तरल दूध उपलब्ध कराना था। हालाँकि यह डेयरी क्षेत्र में आज एक प्रमुख खिलाड़ी है, लेकिन शिशु आहार बाजार में यह नेस्ले को चुनौती नहीं दे पाया है ।नेस्ले के पास पहले से ही वितरण, खरीद और उत्पादन की मजबूत व्यवस्था थी, लेकिन शिशु आहार जैसे सेगमेंट के लिए, अनुसंधान से ही विश्वास बनता है।कंपनी के पास शुरुआती दौर में अनुसंधान एवं विकास में निवेश करने और अपने उत्पादों को पैकेटबंद भोजन के बजाय %वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित% पोषण के रूप में स्थापित करने के लिए पर्याप्त पूंजी और धैर्य था। 1980 के दशक में स्थापित नेस्ले पोषण संस्थान इस दृष्टिकोण का केंद्र बन गया, जिसने वर्षों से विवादों से जूझ रही नेस्ले को मजबूती प्रदान की । बाजार हिस्सेदारी के संदर्भ में, स्वतंत्र शोध से पता चलता है कि नेस्ले के शिशु फार्मूला ब्रांड, एनएएन और लैक्टोजेन भी भारत में 60 फीसदी से अधिक बाजार हिस्सेदारी रखते हैं।

ब्रांड मजबूती की वजह : 1992 में, भारत ने शिशु दूध विकल्प (आईएमएस) अधिनियम पारित किया, जिसके तहत दो साल से कम उम्र के बच्चों के लिए शिशु आहार का प्रचार करना अवैध हो गया।यह कोई आकस्मिक नीति नहीं थी। उस समय तक, वैश्विक शिशु आहार उद्योग (नेस्ले सहित) गहन जांच के दायरे में था। 1970 के दशक से ही, रिपोर्टों में कंपनियों पर आरोप लगाया गया था कि वे वैज्ञानिक प्रतीत होने वाले आक्रामक विपणन का उपयोग करके माताओं को यह विश्वास दिला रही थीं कि फार्मूला दूध, स्तनपान से बेहतर है।जिसके गंभीर स्वास्थ्य परिणाम हो सकते थे। 1981 में, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्तनपान विकल्प उत्पादों के विपणन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संहिता जारी की। भारत में भी एक सशक्त सामाजिक आंदोलन के परिणामस्वरूप आईएमएस अधिनियम (और इसका 2003 का संशोधन) पारित हुआ। इसने प्रभावी रूप से दो साल से कम उम्र के शिशु आहार के लिए टीवी और प्रिंट विज्ञापन पर प्रतिबंध लगा दिया । इसके अलावा दुकानों या फार्मेसियों में प्रचार अभियान पर भी रोक लगा दी । यही नहीं,स्वास्थ्यकर्मियों या अस्पतालों को मुफ्त नमूने, छूट या उपहार भी नहीं दिए जा सकते हैं । कानून का उद्देश्य जन स्वास्थ्य था। विडंबना यह है कि यही कानून भारत में शिशु आहार के क्षेत्र में नेस्ले के प्रभुत्व को मजबूत करने वाला सबसे बड़ा कारक बन गया।विज्ञापन पर प्रतिबंध लगने के बाद, विश्वास एक ऐसी संपत्ति बन गया जिसे चुनौती देना मुश्किल था। कानून से पहले मौजूद हर ब्रांड बाजार में दिखाई देता था । इसके बाद आने वाला कोई भी ब्रांड अदृश्य हो गया।नेस्ले ने भारत में पहचान और विश्वसनीयता बनाने में लगभग आठ दशक लगा दिए थे। 1992 के बाद, यह एक अजेय लाभ बन गया।कोई भी नया प्रतियोगी नेस्ले से अधिक खर्च नहीं कर सकता था । नेस्ले से बेहतर मार्केटिंग नहीं कर सकता था, या नए माता-पिता से खुद को परिचित भी नहीं करा सकता था। बाजार में प्रतिस्पर्धा खत्म हो गई । बाजार पर उसका एकाधिकार हो गया ।प्रचार को

सैशे रणनीति

इन सभी लाभों को ध्यान में रखते हुए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि भारत में शिशु आहार की खपत विकसित बाजारों की तरह नहीं है।60 प्रतिशत से अधिक भारतीय परिवार आज भी शिशुओं के लिए घर का बना शिशु आहार ही खिलाते हैं। भारत में प्रतिवर्ष लगभग 2.5 करोड़ बच्चे जन्म लेते हैं। इससे वाणिज्यिक बाजार अपेक्षाकृत छोटा रह जाता है।नेस्ले का सबसे बड़ा प्रतिस्पर्धी कोई दूसरा ब्रांड नहीं है। बल्कि वे पारंपरिक घरेलू नुस्खे हैं जो रसोई में प्रचलित हैं, जिन्हें पीढ़ियों से माताएं, विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, आजमाती और भरोसा करती आई हैं। कंपनी ने शुरू में ही समझ लिया था कि दबदबा सिर्फ बड़े डिब्बों से नहीं बनेगा। यह छोटे-छोटे, रोज़मर्रा के फैसलों से बनेगा। और फिर आया, 20-30 रुपये के सेरेलैक के पाउच।इन पाउचों ने एक साथ दो काम किए। इन्होंने ब्रांड की छवि को कमज़ोर किए बिना उत्पाद को सुलभ बनाया। और इन्होंने लाखों कस्बों और गांवों में किराना स्टोरों में उत्पाद की उपस्थिति सुनिश्चित की। यहां तक कि वे परिवार भी जो पूरा पैक नहीं खरीद सकते थे, वे भी हर भोजन के साथ इस ब्रांड को खरीद सकते थे ।

बाल रोग विशेषज्ञों का लाभ

जब अभिभावकों को जानकारी देने दूसरे शब्दों में विज्ञापन देने पर प्रतिबंध लगा, तो प्रभाव उस माध्यम की ओर स्थानांतरित हो गया जो अभी भी खुला था। वह था , डॉक्टर्स । आईएमएस अधिनियम के तहत, कंपनियों को स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के साथ तथ्यात्मक और वैज्ञानिक जानकारी साझा करने की अनुमति है। वे अस्पतालों को मुफ्त नमूने नहीं दे सकते, न ही रियायती शिशु आहार उत्पाद बेच सकते हैं। मगर डॉक्टरों को बेबी फूड के बारे में बता सकते हैं । इससे नेस्ले पोषण संस्थान (एनएनआई) एक शक्तिशाली रणनीतिक संपत्ति बन गया। उत्पादों का प्रचार करने के बजाय, एनएनआई ने खुद को बाल चिकित्सा विज्ञान में एक भागीदार के रूप में स्थापित कर लिया। एनएनआई शिशु पोषण पर वैश्विक शोध के संक्षिप्त सारांश के लिए बाल रोग विशेषज्ञों को एक मंच प्रदान करता है। शोध और सेमिनारों को प्रायोजित करके, नेस्ले अपने ब्रांड को विश्वसनीय पोषण मानकों से जोड़ता है। यहां तक कि डॉक्टर भी पीढ़ियों से इस उत्पाद से परिचित हो गए हैं। भारत में, इसका प्रभाव बहुत प्रबल है। डॉक्टरों पर मरीज आंख बंद करके भरोसा करता है । इसलिए नए माता-पिता के लिए, बाल रोग विशेषज्ञ की सलाह पर शायद ही कभी बहस होती है । वे उसका पालन करते हैं। समय के साथ, इसने नेस्ले के उत्पादों को पसंद की बजाय अनिवार्य विकल्प बना दिया।

एक बार ऐसा हो जाने पर, प्रतिद्वंद्वी ब्रांड, विशेषकर विज्ञापन पर प्रतिबंध लगे ब्रांड के लिए, मौजूदा ब्रांड को हटाना बेहद मुश्किल हो गया । यहां प्रतिस्पर्धी गुणवत्ता में कमी नहीं कर रहे थे। लेकिन वे ग्राहक के भरोसे तक पहुंच नहीं पा रहे थे।

सोना है सदा के लिए

भारतीय संस्कृति और सभ्यता में सोने का हमेशा विशेष महत्व रहा है। इसीलिए भारत को सोने की चिडिया कहा जाता है। भारत में सोने में निवेश की परंपरा पुरातन काल से चली आ रही है। इसीलिये वर्तमान में भारत के घरों के सोने का कुल मूल्य भारत की वर्तमान कुल अर्थव्यवस्था 360 लाख करोड़ से भी ज्यादा हो गया है। पुराने समय से ही सोने को एक वस्तु के बजाए मुद्रा के रूप में देखा गया है । सोने को बुरे समय में हमेशा से ही सुरक्षित साथी माना गया है। सोने में किए गए निवेश ने इसके निवेशको को कभी निराश नहीं किया।

इस वर्ष में सोने की कीमतों में 100 प्रतिशत से भी ज्यादा बढ़त देखने को मिली। अगर पिछले 25 वर्षों का भी इतिहास देंखे तो सोने ने बाकी सभी उपलब्ध निवेश विकल्पों से ज्यादा रिटर्न निवेशको को दिया है। अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के सन् 2024 में दोबारा निर्वाचित होने के बाद से ही दुनिया भर में भारी अनिश्चितता का माहौल निर्मित हुआ । जिसने दुनिया भर के वित्तीय बाजारों को झकझोर करह्य रख दिया है। निवेशको में भारी निराशा का वातावरण पिछले 2 वर्षो से बना हुआ है और निवेशक बाजार के उतार चढ़ाव से भी भारी परेशान हुए है। इस निराशा के माहौल में सोना निवेशकों को बेहतर रिटर्न देते हुए नजर आया और सोने ने ये एक बार फिर से साबित किया कि सोने पर क्यूं निवेशको को भरोसा करना चाहिए। वर्तमान में वैश्विक अनिश्चितता का माहौल बना हुआ है। चाहे वो अमेरिका का 40 ट्रीलियन डालर का ऋण हो। अमेरिका का दुनिया भर के देशों के साथ व्यापारिक तनाव हो। इजरायल- अमेरिका -इरान का परमाणु संधि को लेकर विवाद हो। ईरान और बांग्लादेश जैसे देशों में गृह युद्ध जैसे हालात हो। मध्य पूर्व का प्रभाव, दुनिया की विकास दर में कमी। अमेरिका-चीन के बीच व्यवहारिक विवाद। यह सभी कारण आने वाले समय में भी की अर्थव्यवस्था में अनिश्चिता बरकरार रखेगें। अनिश्चितता के इस दौर में निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो में15 प्रतिशत तक सोने में निवेश जरूर करना चाहिए। असल में, सोना सुरक्षा देता है और हेजिंग का काम भी करता है। पूर्व में प्राप्त रिटर्न कभी भी भविष्य में मिलने वाले प्रतिफल की गारंटी नहीं है। लेकिन इतिहास गवाह है कि सोने ने निवेशको को कभी निराश नही किया है। सोना आपको सुरक्षा तो देता ही है। बल्कि लम्बी अवधि में सुरक्षा के साथ हमेशा बेहतर रिटर्न भी देता है। इसलिए कहा भी गया है – सोना है सदा के लिए।

टेक्नो पोवा कर्व 2 5जी की लॉन्चिंग होगी जल्द

नई दिल्ली । भारत में टेक्नो कंपनी ने अपने नए स्टाइलिश हैंडसेट टेक्नो पोवा कर्व 2 5जी की लॉन्चिंग जल्द होने वाली है। कंपनी ने एक्स पर घोषणा करते हुए बताया कि नया पोवा कर्व 2 भारत में 13 फरवरी दोपहर 12 बजे पेश किया जाएगा। यह मॉडल पिछले साल मई 2025 में लॉन्च हुए पोवा कर्व 2 5जी का अपग्रेडेड वर्जन है। लॉन्च के बाद यह फोन अमेज़न पर खरीदने के लिए उपलब्ध होगा। डिज़ाइन को लेकर टेक्नो पहले ही टीज़र जारी कर चुका है। इसमें एक प्रीमियम घुमावदार रियर पैनल दिखाई देता है, जो किनारों की ओर स्लिम होता जाता है। बैक पैनल पर मैट फिनिश दी गई है और संपूर्ण लुक इसे बजट से ज्यादा मिड-रेंज स्मार्टफोन जैसा बनाता है। कंपनी ने पुष्टि की है कि टेक्नो पोवा कर्व 2 5जी तीन आकर्षक रंगों काला, सिल्वर और बैंगनी में उपलब्ध होगा। फोन का डिजाइन पिछले मॉडल की तुलना में कहीं अधिक स्लीक और प्रीमियम नजर आ रहा है। स्पेसिफिकेशन्स का आधिकारिक खुलासा अभी बाकी है, लेकिन रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि टेक्नो पोवा कर्व 2 5जी में मीडियाटेक एमटी 6858 एसओसी, अधिकतम 12जीबी रैम और एंड्राएड 16 ओएस दिया जा सकता है। डिस्प्ले के लिए फोन में 1080गुणा2364 पिक्सल का स्क्रीन रिज़ॉल्यूशन मिलने की उम्मीद है। बैटरी क्षमता भी इस बार काफी बड़ी हो सकती है, क्योंकि अफवाहों में 7750एमएएच लिथियम-आयन पॉलिमर बैटरी का जिक्र सामने आया है।

वॉशिंगटन सुंदर दिल्ली में टीम से जुड़ेंगे-सूर्यकुमार यादव

मुंबई

भारतीय टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने कहा कि, वॉशिंगटन सुंदर 12 फरवरी को नामीबिया के खिलाफ होने वाले अगले टी-20 विश्व कप मैच के लिए उपलब्ध रहेंगे।

वॉशिंगटन साइड स्ट्रेन के कारण पिछले कुछ समय से टीम से बाहर थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अभ्यास मैच भी नहीं खेला था। उन्होंने नेट्स में गेंदबाजी शुरू कर दी थी, लेकिन टीम प्रबंधन ने चार फरवरी को हुए अभ्यास मैच में उन्हें नहीं खिलाने का निर्णय किया। जसप्रीत बुमराह भी अभ्यास मैच और शनिवार को अमेरिका के खिलाफ हुए मैच में नहीं खेले। अमेरिका के खिलाफ उम्मीद से अधिक कड़े मैच के बाद सूर्यकुमार ने दोनों खिलाड़ियों पर बात की। उन्होंने कहा,

वॉशिंगटन सुंदर हमारे साथ दिल्ली में जुड़ रहे हैं। वह ठीक हैं और सब कु छ सही है। मौजूदा हालात में वॉशिंगटन, स्पिन ऑलराउंडर अक्षर पटेल के बैक-अप हैं। अक्षर पटेल ने अमेरिका के खिलाफ 162 रन के बचाव में 24 रन देकर दो विकेट लेकर अहम भूमिका निभाई थी। अक्षर और वरुण चक्रवर्ती के अलावा जब तक तीसरे स्पिनर की जरूरत न हो, फिट होने के बावजूद वॉशिंगटन एकादश से बाहर रह सकते हैं। फिट होने पर बुमराह टीम में वापस आएंगे। सूर्यकुमार ने कहा, 'मौसम की वजह से उन्हें तेज बुखार था।' जिसका असर मुंबई में पहले मैच से पहले अभिषेक शर्मा पर भी पड़ा था। बुमराह की गैरमौजूदगी में मोहम्मद सिराज की वापसी हुई, जिन्होंने अखिरी बार जुलाई 2024 में भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय टी-20 मैच खेला था।

एशियन निशानेबाजी चैंपियनशिप-2026

अर्जुन-एलावेनिल की जोड़ी ने जीता स्वर्ण पदक

नई दिल्ली

भारत के अर्जुन बाबूता और एलावेनिल वलारिवान ने रविवार को नई दिल्ली में चल रही एशियन निशानेबाजी चैंपियनशिप 2026 में नए वर्ल्ड रिकॉर्ड स्कोर के साथ 10मी एयर राइफल मिश्रित टीम का खिताब जीतकर मेजबान टीम की गिनती में एक और स्वर्ण पदक जोड़ दिया।

आज यहां खेले गए मुकाबले में भारतीय जोड़ी ने शुरू से आखिर तक फाइनल में अपना दबदबा बनाए रखा और 505 के स्कोर के साथ शीर्ष पर रहते हुए खिताब अपने नाम किया। यह 10 मी एयर राइफल मिश्रित टीम निशानेबाजी फाइनल में नया विश्व रिकॉर्ड स्कोर भी था, जो पिछले महीने स्लोवेनिया में आईएसएसएफ ग्रांप्री में जर्मन जोड़ी हैना बुएहलमेयर और मैक्सिमिलियन उलब्रिच के बनाए 502.7 के पिछले रिकॉर्ड से बेहतर है। अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में 10 मी. एयर राइफल मिश्रित टीम स्पर्धा के पदक राउंड का फॉर्मेट बदलकर चार टीमों का शूटऑफ कर दिया गया, जिसमें अलग-अलग स्वर्ण और कांस्य पदक मैच होंगे, जो एक जनवरी, 2026 से लागू होगा। इसलिए रिकॉर्ड भी उसी तारीख से माना जायेगा। कोरिया गणराज्य के किम वूरिम और क्वोन यूंजी की जोड़ी ने 501 के स्कोर के साथ रजत पदक जीता, जबकि जापान के नाओया ओकाडा और मिसाकी नोबाता की जोड़ी ने 437.9 के स्कोर के साथ कांस्य पदक जीता।

बॉक्सम एलीट इंटरनेशनल-2026

लवलीना और अरुंधति की अगुआई में भारत ने 9 गोल्ड जीते

ला नुसिया

भारत ने आखिरी दिन शानदार प्रदर्शन करते हुए बॉक्सम एलीट इंटरनेशनल 2026 को बहुत सफल तरीके से खत्म किया, जिसमें ओलंपिक मेडलिस्ट लवलीना बोरगोहेन और पूर्व यूथ वर्ल्ड चैंपियन अरुंधति चौधरी ने ला नुसिया, एलिकांटे में शानदार फिनिश करते हुए नौ गोल्ड मेडल जीते। एक खास उपलब्धि यह रही कि शनिवार को भारत ने सात एलीट विमेंस फाइनल में हिस्सा लिया - जिसमें 54किग्रा डिवीजन में एक ऑल-इंडियन टाइटल

क्लैश भी शामिल था - और हर एक में गोल्ड मेडल जीता।ला नुसिया, एलिकांटे में हुए बॉक्सम एलीट 2026 में 20 देशों के 200 से ज़्यादा बॉक्सर्स ने हिस्सा लिया, जिससे सीजन की शुरुआत में ही एक हाई-क्वालिटी इंटरनेशनल टेस्ट मिला। भारत नौ गोल्ड, तीन सिल्वर और सात ब्रॉन्ज मेडल के साथ कॉम्पिटिशन का सबसे सफल देश रहा।

भारत की महिलाओं ने आखिरी दिन बेंचमार्क सेट किया। मंजू रानी (48किग्रा) और नीतू (51) ने स्पेन की मार्टा लोपेज़ और नोएलिया गुटिरेज़ पर एकमत से ज़बरदस्त जीत के साथ शुरुआत की, इससे पहले पूनम (54) ने कड़े मुकाबले वाले ऑल-इंडियन फाइनल में हमवतन प्रीति को हराया। प्रिया (60) और अरुंधति (70) ने यूक्रेनी विरोधियों पर 5:0 से शानदार जीत हासिल की, जबकि लवलीना (75) ने अपना खास कंट्रोल और संयम दिखाते हुए इंग्लैंड की मैरी-केट स्मिथ को 4:1 से हराया। नैना (80) ने यूक्रेन की रईसा पिस्कुन पर आसान जीत के साथ स्वीप पूरा किया।

पुरुषों के फ़ाइनल में, सचिन (60) ने दिन के सबसे रोमांचक मुकाबलों में से एक में कनाडा के केओमा-अली अल अहमदीह को 3:2 से हराया, जबकि आकाश (75) ने कज़ाकिस्तान के अमन कोंसबेकोव पर 3:2 से रोमांचक जीत के बाद एक और गोल्ड मेडल जीता। दीपक (70) और अंकुश (80) को क्रमशः कज़ाकिस्तान और यूक्रेन से कड़ी टक्कर मिलने के बाद सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा।

जागरेब ओपन : मनीषा ने स्वर्ण, अंतिम ने कांस्य जीता

जागरेब (क्रोएशिया)

भारत की मनीषा भानवाला ने जागरेब ओपन 2026 कुश्ती टूर्नामेंट में महिलाओं की 57 किग्रा फ्रीस्टाइल वर्ग में स्वर्ण जीता, जबकि अंतिम पंघाल ने 53 किग्रा वर्ग में कांस्य पदक जीता।

एशियाई चैंपियन मनीषा भानवाला ने क्वालिफायर में स्वीडन की टिंड्रा डेलमिर को 9-4 से हराकर अपने अभियान की शुरुआत की, जिसके बाद क्वार्टर-फाइनल में कजाकिस्तान की निलुफर रैमोवा के खिलाफ 14-4 से शानदार जीत दर्ज की। इसके बाद भारतीय पहलवान ने जर्मनी की एमोरी एंड्रिच को 11-0 से हराकर फाइनल में जगह बनाई, जहां उन्होंने जापान की पूर्व अंडर-23 विश्व चैंपियन हिमेका तोकुहारा को 3-0 से हराकर जागरेब ओपन में भारत का दूसरा स्वर्ण पदक जीता। दो बार की विश्व कुश्ती चैंपियनशिप की कांस्य पदक और ओलंपियन अंतिम पंघाल ने भी 53 किग्रा वर्ग में पोडियम फिनिश के साथ जागरेब में भारत की पदक संख्या में इजाफा

किया। उन्होंने क्वार्टर में अमेरिका की केटी गोमेज को 11-0 से हराकर अपने अभियान की शुरुआत की, लेकिन सेमीफाइनल में एक और अमेरिकी पहलवान और आखिर में चैंपियन बनी एवरेस्ट लेडेकर से हार गईं। यह मुकाबला 2-2 से ड्रॉ रहा, लेकिन अंतिम क्राइटेरिया के आधार पर हार गईं। कांस्य पदक मुकाबले में, अंतिम पंघाल ने अपनी ही देश की अंजली कछवा को 10-0 से हराकर शानदार जीत दर्ज की, जो क्वार्टर फाइनल में एवरेस्ट लेडेकर से हार गई थीं। इस बीच, दीक्षा मलिक ने भी 72 किग्रा महिला फ्रीस्टाइल वर्ग में रजत जीता।

बड़ा उलटफेर होते-होते बचा, आखिरी ओवर में इंग्लैंड ने नेपाल को हराया

नई दिल्ली

टी-20 वर्ल्ड कप 2026 के पांचवें मैच में नेपाल की टीम ने इंग्लैंड को हराया नहीं लेकिन डराया जरूर। इस टूर्नामेंट के दूसरे दिन ही बड़ा उलटफेर होते-होते बच गया। ग्रुप सी के इस मैच में नेपाल की टीम इंग्लैंड से 4 रन से हार गई। इस जीत के बावजूद इंग्लैंड की टीम ग्रुप सी की अंकतालिका में दूसरे स्थान पर है और वेस्टइंडीज टॉप पर है। इस मैच में पहले खेलते हुए इंग्लैंड ने 20 ओवर में 7 विकेट पर 184 रन बनाए थे, जवाब में नेपाल ने 180 रन 6 विकेट पर बनाए।यह मैच मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला गया। नेपाल की टीम यह मुकाबला जरूर हारी लेकिन इस टीम ने पूरे वानखेड़े स्टेडियम पर मौजूद क्रिकेट फैंस और दुनिया भर के क्रिकेट लवर्स का दिल जीत लिया। नेपाल की टीम ने यह भी बता दिया है कि इस ग्रुप की कोई भी टीम उन्हें हल्के में नहीं ले सकती है। खासतौर से वेस्टइंडीज, स्कॉटलैंड और इटली के खिलाफ यह टीम जीत दर्ज करके सुपर 8 में भी जगह बना सकती है। नेपाल की ने आज वह किया जिससे हर नेपाली क्रिकेट फैन गर्व से सीना चौड़ा कर सकता है। वहीं यह टीम इंग्लैंड के खिलाफ जीत से जरूर चूक गई लेकिन नेपाली बल्लेबाजों ने जिस तरह इंग्लैंड के गेंदबाजी आक्रमण की धज्जियां उड़ाईं वह तारीफ के काबिल था। जिस टीम में जोफ्रा आर्चर, सैम करन, विल जैक्स,आदिल रशीद जैसे बेहतरीन गेंदबाज मौजूद हैं, उस टीम की गेंदबाजी के खिलाफ नेपाल ने 184 रन का लक्ष्य लगभग-लगभग चेज ही कर लिया था ।

हजारों फर्जी परमिट से, सोम ने आबकारी अफसरों की आपराधिक सांठ से सरकार को अरबों रुपयों के राजस्व का चूना लगाया

आबकारी कमिश्नर और DC भोपाल ने जिम्मेदारी और सरकार के प्रति वफादारी नहीं निभाई वर्ना अब तक आंकलन कर लिया जाता

साबित है ये क्यों पढ़ें...
आबकारी कमिश्नर ने माना सोम डिस्टलरीज से शराब तस्करी करने के लिए आबकारी अधिकारियों, कर्मचारियों ने लगभग 02 हजार फर्जी परमिट बनाए गए

(राजेन्द्र के गुप्ता 9827070242)

सोम डिस्टलरीज के समस्त लायसेंस निलंबन आदेश दिनांक 04/02/2026 में आबकारी आयुक्त के द्वारा यह साफ लिखा है कि किस आबकारी अधिकारी/कर्मचारी ने कितनी संख्या में फर्जी परमिट बनाए है जो लगभग 1711 होते है वो भी परमिट संख्या के अनुसार बुक के रूप में जोड़े तो अधिक होंगे

इतने फर्जी परमिट से कितने अरब रुपयों की कितने करोड़ लीटर शराब की तस्करी की गई है ये अब तक आबकारी विभाग के (ना)काबिल अफसरों ने नहीं जांचा है, ना ही बेटमा में पकड़ी गई मात्रा से आंकलन किया है?

इस अनुसार देखे तो इतनी मात्रा में शराब तस्करी करके, कितने अरबों के राजस्व की हानि सोम के मालिकों और इस अपराध में शामिल आबकारी अफसरों ने शासन को पहुंचाई है, इसका भी आंकलन किया जाना होगा और उतनी राशि की वसूली दोषियों, जिम्मेदारों से की जाना चाहिए

इस मांग को लेकर शिकायत हुई है, अब देखना ये है कि वर्ष 2023 के बारहवें महीने में हुई सजा पर और वर्ष 2011 में दर्ज हुए अपराध पर, वर्ष 2026 में लायसेंस निलंबित करने वाले आबकारी कमिश्नर, शासन के हित में कब तक इस मांग पर निर्णय ले पाते है या इस मामले को लेकर डील की संभावना को उत्पन्न करेंगे ?

सोम के लायसेंस निलंबन की बजाए निरस्त ही किए जाने थे: आबकारी कमिश्नर अभिजीत अग्रवाल के द्वारा सोम डिस्टलरीज के लायसेंस निरस्ती आदेश में साफ लिखा है कि — ' अनेकोनेक फर्जी परमिट बुक कूटरचित करने का अवैध कार्य अवैध साधनों से करने के लिए आपराधिक षड़यंत्र बनाकर कूट रचित परमिट से छल करने के आशय से कूटरचना की गई '

अब सवाल यह उठता है कि आबकारी आयुक्त सहित अब तक पदस्थ रहे भोपाल ष्ष्ट, रायसेन ष्ट ने आबकारी आयुक्त के आदेश में उल्लेखित फर्जी परमिटों से की गई शराब तस्करी की मात्रा का आंकलन क्यों नहीं किया ?

क्या सभी अपना अपना हिस्सा लेकर चुप बैठ गए ? और शासन से गद्दारी करके शासन को राजस्व हानि पहुंचाने की धोखाधडी में शामिल हो गए ?, अन्यथा फर्जी परमिटों की संख्या सामने आने के बाद से अब तक फर्जी परमिटों से की गई शराब तस्करी की मात्रा का और राशि का आंकलन क्यों नहीं किया गया है ?

पढ़ते रहें....

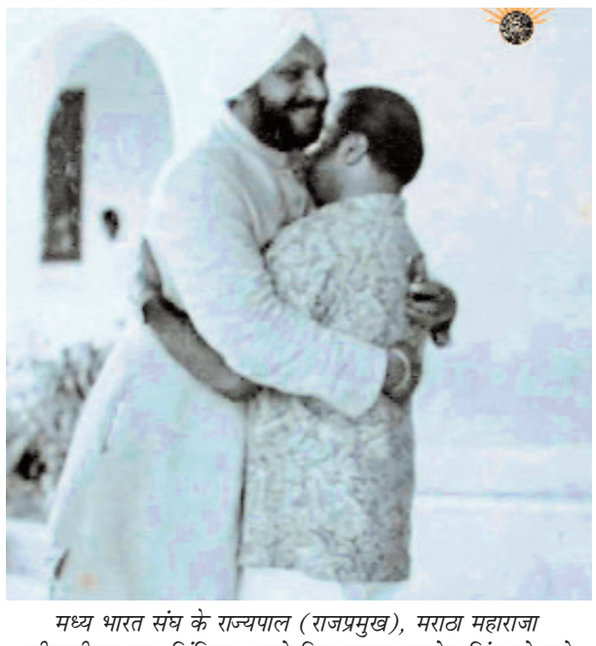

मध्य भारत संघ के राज्यपाल (राजप्रमुख), मराठा महाराजा जीवाजीराव एम. सिंधिया, अपने मित्र सरदार बलदेव सिंह को गले लगाते हुए दिखाई दे रहे हैं। सरदार बलदेव सिंह भारत गणराज्य के पहले रक्षा मंत्री थे, जिन्होंने 1947 से 1948 तक कश्मीर में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान रक्षा मंत्रालय का नेतृत्व किया था। 1942 में, सिंह को क्रिप्स मिशन के साथ चर्चा में सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया था। उन्होंने 1946 के कैबिनेट मिशन के दौरान भी इसी तरह की भूमिका निभाई, जहां उन्होंने विभाजन का विरोध किया और धार्मिक अल्पसंख्यकों के संरक्षण की वकालत की।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में 18 फरवरी को कुलैथ में होगा किसान सम्मेलन

ग्वालियर
मध्यप्रदेश वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रहा है। किसान कल्याण वर्ष एवं संकल्प से समाधान अभियान के तहत प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 18 फरवरी को ग्वालियर जिले के ग्राम कुलैथ में किसान सम्मेलन में किसानों से रूबरू होंगे। इस मौके पर किसानों के लिये आधुनिक खेती किसानी के लिये उपयोग किए जाने वाले कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी का भी प्रदर्शन किया जायेगा।

कलेक्टर श्रीमती चौहान ने कुलैथ पहुँचकर आयोजन स्थल का किया निरीक्षण

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के 18 फरवरी को प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारियों के लिये कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने सोमवार को ग्राम कुलैथ पहुँचकर आयोजन की व्यवस्थाओं का अवलोकन किया और विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस मौके पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सोजान सिंह रावत, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री प्रदीप कुमार, कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग श्री भदौरिया सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने कुलैथ में किसान सम्मेलन आयोजन के संबंध में स्थल निरीक्षण कर व्यवस्थाओं के संबंध में स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं विभागीय अधिकारियों से विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि प्रदेश में वर्ष 2026 किसान कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। किसानों के हित में किए गए विभिन्न कार्यों और आधुनिक कृषि के लिये उपयोग हो रहे उपकरणों का प्रदर्शन भी कार्यक्रम में किया जाए। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने सीईओ जिला पंचायत श्री सोजान सिंह रावत एवं अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री प्रदीप कुमार को भी किसान सम्मेलन की विस्तृत कार्ययोजना तैयार कर समय-सीमा में सभी कार्यों को कराने के दिशा निर्देश दिए।

कृषक कल्याण वर्ष में छात्र, शिक्षक व संस्थाओं से मांगे सुझाव

ग्वालियर । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा के अनुसार वर्ष 2026 कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसका शुभारंभ 11 जनवरी को किया गया है। इस दौरान कृषक कल्याण से संबंधित विभागों की गतिविधियां संचालित की जाएगी। इसे ध्यान में रखते हुए 10 दिशात्मक मॉडल पर कार्य किया जाना है। इस कार्ययोजना की तैयारी को लेकर आमजन, कृषक, कृषि के क्षेत्र में कार्य कर रही संस्थाएं, संगठन, छात्र, उद्यमी इत्यादि अपने सुझाव Mygov.in पोर्टल पर कैंपेन के माध्यम से 250 शब्दों में सुझाव दे सकते हैं।

यह है 10 दिशात्मक मॉडल : ट्रांसफोर्मिग एग्रीकल्चर, किसान आय वद्धि एवं अपव्यय में कमी, जल मृदा एवं कृषि आदान का अनुकूलन, जलवायु, उर्जा एवं सततता, मूल्य श्रृंखला, बाजार एवं किसान हिस्सेदारी, निर्यात, ब्रांडिंग एवं वैश्विक उपस्थिति, अनुसंधान, नवाचार एवं सशक्तिकरण, विरासत, संस्कृति एवं सॉफट ब्रांडिंग, शासन, डिजिटल व्यवस्था एवं पारदर्शिता ।

शांति और सदभाव के साथ मनाएँ सभी त्यौहार - कलेक्टर श्रीमती चौहान

जिला शांति समिति की बैठक में कलेक्टर ने जिलेवासियों से की अपील

ग्वालियर
जिले में आपसी भाईचारा, शांति एवं सदभाव के साथ पारंपरिक ढंग से होली के साथ सभी त्यौहार मनाए जाएं। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने जिला शांति समिति की बैठक में जिलेवासियों से यह अपील की है। बैठक में महाशिवरात्रि, रमजान, होली, ईद-उल-फितर, रामनवमी, गुड़ी पड़वा, गुड फ्राइडे, चैती चाँद, हनुमान जयंती एवं बैसाखी त्यौहारों को ध्यान में रखकर चर्चा की गई।

सोमवार को कलेक्ट्रेट के सभागार में आयोजित जिला शांति समिति की बैठक में नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय, अपर कलेक्टर श्री सी बी प्रसाद, एडिशनल एसपी सुश्री सुमन गुर्जर, शहर के सभी अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, विभागीय अधिकारी सहित शांति समिति के सदस्य सर्वश्री संत कृपाल सिंह, शहरकाजी सहित शांति समिति के सदस्य एवं विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने कहा कि ग्वालियर जिले में सभी त्यौहार शांति और सदभाव के साथ मनाए जाते हैं। त्यौहारों के दृष्टिगत जिला शांति समिति की बैठक के साथ ही थाना स्तर पर भी बैठकों का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने कहा कि त्यौहारों के दौरान ही बच्चों की परीक्षायें संचालित रहेंगीं। इसको ध्यान में रखकर ध्वनि विस्तारक यंत्रों का उपयोग निर्धारित समय में धीमी गति के साथ किया जाए।

बैठक में कलेक्टर ने कहा कि सभी त्यौहारों पर मंदिर, मज्जिद, गिरिजाघर व गुरुद्वारों सहित अन्य पूजा घरों के आसपास साफ-सफाई आदि के पुख्ता प्रबंध किए जायेंगे। इसके साथ ही त्यौहारों के दौरान विद्युत कटौती न हो, इस पर भी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया जायेगा।

होली के त्यौहार पर पर्याप्त जल प्रदाय हो यह भी सुनिश्चित किया जायेगा। सुरक्षा की दृष्टि से पर्याप्त पुलिस बल भी तैनात रहेगा। बैठक में शांति समिति के सदस्यों ने अपने महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए। जिनको गंभीरता से सुनकर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

खुशियों की दास्तां

बुजुर्ग को आयुष्मान कार्ड से मिला संबल

ग्वालियर। केन्द्र सरकार की आयुष्मान योजना के तहत नव वंदना आयुष्मान योजना गरीब बुजुर्गों के लिए जीवनदायिनी बन चुकी है। ऐसे बुजुर्ग जिनके पास इलाज के लिए पैसे नहीं है वह अब आसानी से प्राइवेट हास्पिटलों में अपना उपचार कराकर स्वास्थ लाभ ले रहे हैं। आयुष्मान योजना की नव वंदना आयुष्मान योजना के तहत खेड़ापति रोड पर रहने वाले एक 90 साल के बुजुर्ग को संबल मिला है। बुजुर्ग के फेंफडों में पानी भर गया था, इसके कारण ना तो वह चल सकते थे और ना ही ठीक से सांस ले पा रहे थे। कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण बुजुर्ग अपना उपचार भी नहीं करा पा रहे थे। ऐसे में नव वंदना योजना के तहत उनका नि:शुल्क उपचार हुआ, अब वह स्वस्थ्य हैं। खेडापति निवासी श्री आर एस चौहान उम्र 90 साल के फेंफडों में पानी भर गया था। चूंकि उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, इसलिए वह अपना उपचार नहीं करा पा रहे थे। ऐसे में उन्होंने जिला प्रबंधक श्री विजय भार्गव से संपर्क किया। उन्होंने जिला आयुष्मान कॉर्डिनेटर श्री अमन शिवहरे से संपर्क कराया। चूंकि बुजुर्ग की उम्र अधिक थी, ऐसे में वह आयुष्मान योजना के अंतर्गत नहीं आ रहे थे, तब उन्हे आयुष्मान योजना के तहत नव वंदना आयुष्मान योजना का कार्ड बनाया गया। इसके बाद चिन्हित प्राइवेट अस्पताल में उन्हें भर्ती किया गया। जहां पर उनका उपचार हुआ। उपचार उपरांत अब वह स्वस्थ हैं। श्री आर एस चौहान ने नव वंदना आयुष्मान योजना के तहत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को धन्यवाद दिया है।

बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत ग्वालियर जिले में जागरूकता रथ का व्यापक भ्रमण

स्कूलों व पंचायतों में दिलाई गई शपथ

ग्वालियर
महिला एवं बाल विकास विभाग एवं सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट के संयुक्त तत्वावधान में ग्वालियर जिले में बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत संचालित जागरूकता रथ यात्रा का सोमवार को विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों, पंचायतों एवं शैक्षणिक संस्थानों में प्रभावी रूप से संचालन किया गया।

इस अभियान के तहत जागरूकता रथ को झण्डा का पूरा, महाराजपुर, बिठौली, तिगरा, लखनपुर, कुलैथ, जिगसोली, सिगौरा, भयपुरा, बरई, नयागांव, पनिहार, गिरवाई, गुड़ा एवं गुड़ी का नाका सहित अनेक ग्राम पंचायतों में पहुँचाया गया। रथ के माध्यम से ग्रामीणजन, विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं पंचायत प्रतिनिधियों को बाल विवाह के दुष्परिणामों तथा इससे संबंधित कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी गई। अभियान के दौरान संबंधित विद्यालयों एवं ग्राम पंचायत परिसरों में बाल विवाह के विरुद्ध शपथ कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, पंचायत प्रतिनिधियों एवं ग्रामीण नागरिकों ने बाल विवाह न करने और इसे रोकने हेतु सदैव सजग रहने की शपथ ली।

जागरूकता रथ यात्रा का उद्देश्य समाज में फैली इस सामाजिक कुप्रथा के प्रति जनचेतना विकसित करना, बाल अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करना तथा आमजन को यह संदेश देना है कि बाल विवाह न केवल सामाजिक अपराध है बल्कि कानूनन दंडनीय भी है। इस अवसर पर सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट के ब्लॉक समन्वयक व सफल युवा मंडल अध्यक्ष श्री अरविंद कुशवाह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी, पंचायत प्रतिनिधि एवं सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

आवारा कुत्तों के नियंत्रण के लिए नगर निगम खोलेगा पांच डॉग शेल्टर होम

निगम ने एक और एबीसी सेंटर किया प्रारंभ, डॉग बाइट्स से बचने के लिए एडवाइजरी जारी

ग्वालियर
गर्मी का मौसम की शुरूआत हो चुकी है, तापमान के बढने के साथ ही आवारा कुत्तों के कटने की घटनाओं में बढोतरी होना शुरू हो जाती है। नगर निगम ने शहरवासियों को आवारा कुत्तों के आंतक से बचाने के लिए पांच डॉग शेल्टर होम खोले जायेंगे। साथ ही आवारा कुत्तों की बढोतरी को रोकने के लिए एक नया एबीसी सेंटर भी खोला गया और कुत्तों को पकडने के लिए एक नई गाडी भी चलाई जा रही है। यह बात कलेक्टर श्रीमती रूचिका चौहान की अध्यक्षता में आयोजित जिला शांति समिति की बैठक में नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय ने आवारा कुत्तों की रोकथाम के लिए किए जा रहे उपायों के बारे में बताया। इसके साथ ही डॉग बाइट्स से बचाव के लिए एडवाइजरी भी जारी की गई है। इसके साथ ही आवारा कुत्तों की सूचना देने के लिए 9238351620 एवं 0751-2438358 नंबर जारी किए हैं।

कलेक्टर श्रीमती रूचिका चौहान की अध्यक्षता में आयोजित शांति समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय ने

बताया कि लक्ष्मीगंज के पीछे कुत्तों का शेल्टर होम प्रारंभ हो गया है। इसके साथ ही नया एबीसी सेंटर भी खोला जा रहा है जिससे कुत्तों की नसबंदी का कार्य और तेज गति से किया जा सके। इसके साथ ही आवारा कुत्तों को पकडने के लिए एक नई गाडी भी संचालित की जा रही है। नगर निगम आयुक्त ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय की गाइड लाइन की जानकारी देते हुए शहरवासियों से अपील की है कि वह पूर्व से नसबंदी किए गए कुत्तों जिनके कान कटे हों, पालतु कुत्तों 6 माह से छोटे श्वानों वाली मादा को पकडने से संबंधित शिकायतें पोर्टल पर दर्ज नहीं कराएं।

यह एडवाइजरी जारी की

नगर निगम द्वारा जारी की गई एडवाइजरी में कुत्तों के काटने से बचने के लिए कुछ जानकारियां दी गई हैं । जिसमें बताया गया है कि आवारा कुत्तों को न छेड़ें, कुत्तों को पत्थर मारना चिढाना या उन्हें भगाना खतरनाक हो सकता है। कुत्तों की सीधे आंखों में न देखें कुत्ते इसे आकामकता समझते हैं। आवारा श्वान यदि कोई खाद्य पदार्थ खा रहा है तो उसे बिल्कुल परेशान न करें। कुत्तों के पास शांत रहें , अगर कोई कुत्ता आपके पास आए तो न भागें, न चिल्लाएं। कुत्ता गुरराए तो धीरे-धीरे पीछे हटें, लेकिन पीठ न दिखाएं। बच्चों को सिखाएं कि वे किसी अनजान या आवारा कुत्ते के पास न जाए।

पालतू जानवरों के मालिकों के लिए यह है जरूरी

नगर निगम द्वारा जारी की गई एडवाइजरी में बताया गया है कि पालतू कुत्तों का समय पर टीकाकरण (विशेष रूप से रेबीज का) लगवाए। पालतू कुत्ते को पट्टे से घुमाएं और आक्रामक आवारा कुत्तों से दूर रखें।

कुत्ता काट ले तो यह करें

आवारा कुत्ता काट ले तो घाव को तुरंत साबुन और साफ पानी से कम से कम 10 मिनट तक धोए। एंटीसेप्टिक लगाएं और तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। घटना की सूचना ग्वालियर नगर निगम या नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र को दें।

एंटीरेबीज एवं नि:शुल्क नसंबदी के लिए इस नंबर पर दें सूचना , नगर निगम सीमा क्षेत्र में आवारा श्वानों की नि:शुल्क नसबंदी एवं एन्टीरेबीज टीकाकरण हेतु ए.बी.सी. सेन्टर के हेल्पलाईन नम्बर 9555676921 पर कॉल या व्हाट्सएप पर सुबह 9 बजे से सायं 5 बजे तक मैसेज भेज सकते है।

स्वामी एवं प्रकाशक गुरुशरण सिंह अहलुवालिया द्वारा शर्मा ऑफसेट एण्ड प्रिंटर्स H.O NO. 67 घोसीबाडा दानाओली लश्कर ग्वालियर मप्र, 474001 से मुद्रित एवं एम-3/19 ब्लू लोटस हिल कॉलोनी सिरोल रोड ग्वालियर मप्र 474006 से प्रकाशित। संपादक-गुरुशरण सिंह अहलुवालिया, 9425127301, ईमेल sititoday2008@gmail.com (सभी विवादों के लिए न्यायालीन क्षेत्र ग्वालियर होगा) PRGI NO. MPHIN/2009/31963